संपादक
गणेश खुगशाल 'गणी'

सदेई

हे ऊँचि डांड्यों तुम नीसि जावा,
घणी कुळायों तुम छांटि होवा।
मै कू लगीं छ खुद मैतुड़ा की,
बाबा जि को देखण देश देवा।
मैत ऽ कि मेरी तु त पौन प्यारि,
सुणौ तु रैबार त मां को मेरी।
गाडू गदऽन्यू व हिलांस कप्फू,
मैतऽ को मेरा तुम गीत गावा।

तारादत्त गैरोला

धाद

साहित्य अर संस्कृति की मासिक पत्रिका

• वर्ष : 2 • अंक : 8 • मार्च, 2017 RNI No. UTTGAR/2015/63986 • मोल ₹ : 20/-

संकल्पना : लोकेश नवानी

संस्थापक सम्पादक : सुशीला बडोला

सम्पादक : गणेश खुगशाल 'गणी'

संसाधन : विनोद घनशाला, जगदीश बडोला
जगदीश नेगी

अन्वार : राकेश 'राका'

आकल्पन : चन्द्रविजय अरोड़ा, अशोक बलोदी

भितरा रेखांकन : लता शुक्ला

कार्टून : आशीष कुमार

सम्पादकीय कार्यालय : धाद
126, विकास मार्ग पौड़ी-246 001
दूरभाष : +91-9412079537

ई-मेल : dhad.garhwali@gmail.com

एक सालै सदस्यता : 220/- रुप्या

दिल्ली सम्पर्क : ए-162/UG-4, दिलशाद कॉलोनी,
दिल्ली-110 095
सम्पर्क :09013285624

पत्रिका मा छप्यां विचार लिख्वारू का अपणा विचार छन, यां खुणै सम्पादक मंडल को राजि होण जरूरी नी छ।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक गणेश खुगशाल 'गणी' द्वारा
प्रगति प्रिंटिंग प्रेस, एजेंसी चौक पौड़ी,
पौड़ी गढ़वाल से मुद्रित कराकर 'धाद' कार्यालय : 126
विकास मार्ग पौड़ी-246 001 से प्रकाशित.
संपादक : गणेश खुगशाल 'गणी'

चैत अर चैती

गढ़वाळ मा चैत अर चैती की अपणि सांस्कृतिक परम्परा छ यानै चैत तैं 'नाचदो मैना' वि बोल्ये जांद, चैत मै बसन्त को उलार वि अपणा सुमार पर रौंद मतलब मनखि हि ना बल्कन भौरा प्वतळौं को बि यो नाचदो मैना होंद। सांस्कृतिक रूप से यो नाचदो मैना हमारि अपणि धरति का लोक कलाकारों की वजै से बि होंद जब औजि अपणां ढोल दमौ कि गमक अर रंगत का दगड़ि 'चैती पसारा' मांगदन अर दिसा धियाणि भ्यंटेणो तौका सैसुर तक पौंछ्दन।

अपणा लोक की संस्कृति को यो सांस्कृतिक स्वरूप आज बि छैंछ पर अब यि परम्परा कखि कखि ही रयीं छन, चैती पसारा मंगद लोक का यि कलाकार लोक कि प्रचलित गाथौं तैं गौंदन जन राजा हरिशचन्द्र, गंगू रमोला, चन्द्रावलि, जसी फ्यूळि, अर सरू कि गाथा का दगड़ा दगड़ि सदेई। चैती गायन की परम्परा का यों गीतु की शुरुआत मंगलाचरण से होंद अर यि गीत जब अगैन बढ़दन त यों मा बसन्त की अन्वार, गैख कि जैबिरधि कुल विरधि, दिसा धियाणि कि खौरि, मैतै याद, जना प्रसंग शामिल होदन अर दगड़ै दान की महिमा को वर्णन होणों रौंद। चैत की यूं परम्परौं की वजै से अर यि सब मैत अर सौर्यास का व्यटुलों पर केन्द्रित होणा कारण चैत तैं खुदेड़ मैना बि बोले जांद।

चैत को सर्या मैना 'चैती पसार' को मैना होंद। मैत को औजि धियाण को नौन्याळ होण पर धियाण का सैसुर जैकि दान ल्हेंदो छौ, सैत दान की भावना से कुछ चैती गाथा यनि छन जो दान का माथम तैं बतौंदन जन राजा बलि का गौरव कि गाथा—

वो दान्यों मा को दानी राजा बलि दानी, दान्यों मा को दानी हो लो राजा कर्ण।
वो दान्यों मा दानि हो लो राजा बलि दानी, वून जिमि दान कैन, भूमिदान कैन बलि दानी।

यनि राजा हरिशचन्द की गाथा वि गयेंद—

दान्यों मा को दानि होलो राजा हरिचन्द
जैका होला सोना का छत्तर, मोत्यू का खल्याण,
माटो सि धन होलो, सागरों सि मन।

दान का वास्ता दानि तैं मन से तैयार करणों। यनि उपमा लोक की यूं गाथौं मा मिलदन कि कंजूस वि अपणा खीसाउंद हाथ डाळ इयो। लोक का कलाकार अपणां बार-ध्वार यनु वातावरण बणौणा का सल्लि होंदन अर यानै वूकि कंळा कि बर्ची रै।

चैती पसारा मा यि कलावंत ढोल दमौ कि वीं गमक का दगड़ि अपणा लोक की गाथौं तैं गांदन यूं गाथौं मा जादातर प्रेम की गाथा होंदन जन जीतू बगड्वाळ, कुसमा कोलण, रूकमिणी हरण, चन्द्रावलि, सूजु कि सुनारी, ब्रहमकौळ, सुरजकौळ अर गंगू रमोला।

चैती गायन की यीं परम्परा से ही हमारा लोक की यि गाथा आज तक बर्ची रैगेन निथर यि कवि मिट जांदि। हमु तै हमारा गौरवशाली इतिहास का ये प्रसंग कबि सुणणो पढणों नि मिलदा। सदेई कि ज्ब क्वांसि कथा तारादत्त गैरोला जिन सैंकि कि यीं पीढ़ि तैं सौंपि यो कथा गीत तौंको अपणा समय का औज्यू का मुख से चैत का मैना मा ही सुण्यू।

समय का दगड़ि जो बदलौ हवे स्यो लोक कि परम्परौं मा बि हवे, नाचदो मैना चैत अब कखि-कखि नाचद दिखेंद, चैती गायन की परम्परा वि अगनै नि बढ़ सकि, बेड़ों का कंठ मा बच्यां चैती गीत अबि तक अपणि चमक्यकि अन्वार ल्हे कि मंच तक नि पौंछि सका हां श्रीनगर या चैती गायन की शुरूआत जरूर होणी, कुछ कलाकार ये पर काम करणा छन, लोक कि यीं विधा पर काम करणै जरूरत छ यां पर टक्क लगैकि काम होलो त चैती गायन की परम्परा खूब फललि फूललि।

• गणेश खुगशाल 'गणी'

ये मैने धाद

- चैत अर चैती – 3

लोकमत – 5

चैत अर चैती

- नाचदो मैनु : चैतो मैनु – डॉ० डी०आर० पुरोहित 6
- फुलदेई – डॉ० नन्दकिशोर हटवाल 9
- चैत की परम्परा अर त्यवार – राकेश मोहन कण्डारी 11
- बीं आगद हर्यळि बांटद चैत – बीना बेंजवाल 14
- बीं माता जागरों मा 'घुंगुरजोळ' – राधा देवशाली 16
- चैती नृत्य गीत – केशव अनुरागी 18
- फ्योंळि कि गाथा – नीरू कण्डारी 19
- राजभवन मा फूलदेई – मनोज इष्टवाल 21
- ऋतु गीत छन अनुभूति का गीत – गिरीश सुन्दरियाल 22
- सदेई – तारादत्त गैरोला 24
- मैतुड़ा बुलालि ब्वे – मनोज इष्टवाल 33
- चैती गीत – अनिल बिष्ट 34

समाज

- गढ़वाळि पछाणंक – डॉ० सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी 35

कविता

- माटी की कया को बसन्त (बसन्त) ऐगे – कन्हैया लाल डंडरियाल 38
- फ्योंळि – भगवतीचरण निर्मोही 39

इत्यास

- गढ़वाळ का इत्यास की कैला – कमल रावत 40

खबरसार

- चण्डीगढ़ मा उत्तराखण्ड महोत्सव – दीनदयाल सुन्दरियाल 44
- रोजगार से जोड़े जाण चयेन्दि भाषा अर संस्कृति – वीरेन्द्र पंवार 44
- कथा ग्रन्थ 'हुंगरा' को लोकार्पण – गिरीश सुन्दरियाल 46
- राजनेता भारतसिंह रावत को निधन – विमल ध्यानी 48

छपछपि पोड़णि छ

सम्पादक जी,

धाद का सोळा अंक पढ़ण मा ऐनी। छपछपी पणी छः। धाद का ये आन्दोलन मा लिख्वारों, गीतांगों, साहित्यकारों को बड़ो योगदान छ। ये से भी बड़ो काम छ प्रकाशन को। व्यवसायिक युग मा यो धनसाध्य बि छ अर श्रमसाध्य बि। प्रतियोगिता मा रौंण कि कूबत बि। ये कि प्रिंटिंग, गेटअप, ले-आउट, सभी कुछ प्रतिभा की बार-बार परीक्षा लेंदो। आप लोगों का धैर्य अर सांसा की दाद देंण पड़लि। प्रकाशन सामग्री को चयन देखिकन त एक आशा बणणि छ। बोलदा बि छन जैकी वाणी मा शहद, जिकुड़ी मा अमृत अर लेखनी मा धार होंद वो कबि मौरदा नि छन, अमर होन्दन। जिकुड़ी मा अबि तक कर्मभूमि, सत्यपथ, गढ़-गौरव, मैती, हिलांस, रंत-रैबार जना कई पत्र-पत्रिकाओं का असामायिक प्रकाशन बन्द होंण का कारण डाम पण्या छन। धाद कि अभी तक कि अन्वार से त आशा वणि छ अर यां से हमारि नै छ्वाळि तैं हमारा गौरवशाली लोकजीवन कि जानकारी मिलणी छ। यो सब संग्रहणीय छ अर हम जना पढ़दारों कि यां पर आत्ममुग्घता स्वाभाविक छ।

अन्वार, रेखाकंन, कार्टून, सभी कुछ स्तरीय छन। पत्रिका की शुरूआत मा साहित्यकारों, मनीषियों की फोटो क दगड़मा 'विचार' बहुत ही संवेदनशील छन। जुगराज रैनी दिदा।

रोजाना हमारादगड़ मा रौण वाळा दगड़या, कौथिगेर, गीतांग, उत्सवधर्मी लिख्वार सभी लोग ये दर्पण मा कतना अच्छा लगण छन। बोले नी सकेन्दो। सामग्री संयोजन, चयन, विषय का अनुसार लेखदरों मा लिखवाणों अर सम्पादन बार-बार पत्रिका प्रकाशन की परीक्षा की चार छ। यां कि सफलता का वास्ता बधाई।

सम्पादक मंडलतैं विज्ञापन, प्रचार-प्रसार, पाठकों की रुचि, हमारा पर्व, त्योहार, जनमवार, लिख्वारों की पुस्तक समीक्षा, गौं-गौळा मा ताशपत्ती खेलण वाळा, दारू पेंण वाळा बिगच्यां लोगु की दिनचर्या पर बि कलम चलयीं चैणीं छ। सोशल मीड़िया का जमाना मा खट्टी-मिठ्ठी छ्वीं-बथ बि 'धाद' की सामग्री तैं और बि रोचक अर ज्ञानवर्द्धक बणै सकदन।

काफी-कुछ आशा छन।

• चक्रधर कंडवाल
लोकभारती सदन, देवी मंदिर, कोटद्वार

सम्पादक जि

सादर नमस्कार अर सेवा सौळी,

धाद त धै लगै कि फटाफट पहुँच जांदी, वांका वास्ता धन्यवाद। सबि धाद पत्रिका पढ़णा बाद जिकुड़ी मां इन्न छप छपी पड़ीं कि पूछा ना। आपको प्रयास व गढ़वाळि लेखदारों को उल्लास देखी लगदो कि हमारा बीच नै पीढ़ि बि कथगा नया विचारों का साथ औणी छ। भै जुगराज रैन सि सबि लिखदरा, तौं से उम्मीद करे जांदि कि अपणा अंग्रेजी पढ़दरा नन तिनों तैंभी अपणि बोली भाषा को पाठ पढ़ाला, अपणा अच्छा कार्यो का साथ अपणी बोली को बोलकरी हम सम्मान दे सकदौं। सबि लिखदरों तै अंका उत्कृष्ठ लेखन का वास्ता भौत बधाई अर होली का त्यौहार की गला मिली शुभकामना।ह्व

• सुलोचना परमार उत्तरांचली
प्रकाश विहार, धर्मपुर, देहरादून

आशीष कुमार

नाचदो मैनु : चैतो मैनु

डॉ० डी०आर० पुरोहित

जन्म : 8 अगस्त, 1953

कृतियां : रामलीला से रंगमंच की शुरुआत 1985 मा, शैलनट की पैलि कार्यशाला, आपका लिख्यां 4 नाटक विद्यालय मा प्रस्तुत, ICRR दिल्ली की सलाहकार समिति का सदस्य, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली का शोध निदेशक रैनि.

सम्प्रति : हे०न०ब०वि०वि० श्रीनगर मा (अंग्रेजी विषय का प्रोफेसर).

चैतो मैनु उत्तराखण्ड का डांडा मुलुक मां बार त्यौहार, चैती पसारा और फूलदेई का त्यौहार का मैना का तौर पर देखे जांदो। ये मैना हमारा मुलुक मां चार बकिबात का उत्सव होन्दा।

1. **चैती गायन या चैती पसारा**
2. **बीं माता को उत्सव**
3. **फुलदेई**
4. **भिटोली का आला परम्परा**

1. **चैती पसारू :** चैती पसारू अब टोन्स अर यमुना घाटि का कुछ ही गौं मा रै गे पर एक जमाना मा गौं-गौं मा हमारा औजी अर बेड़ा लोग बसन्त का स्वागत मा ऋतु गीत गान्दा छा गौं की हर खळि मा गीत अर नृत्य दिखौन्दा छा, जै का बदला मा गौं का लोग यूं कलाकारु तैं दाळ, नाज, झंगोरु, कोदु, जौ, तिल, गुड़, मर्च, मशाला, लूण, तेल, अर घयूं देन्दा छा। बगत का दगड़ि होयां बदलौ, आर्थिकी का बदलौ का दगड़ि यों कलाकारू को उचित सम्मान अर उचित अनाज न मिलण से या परम्परा जरा-जरा कै हरचि गे।

या परम्परा कतना सुन्दर छै गोनगढ़ पट्टी का स्व० सेवादास जी न सुणाई थौ कि चैत का पहला दिन चौक मा पैलूगीत होन्दो थौ—

धरती आकाश की औ सेवा बोदान:
भूमि भूम्याल की औ सेवा बोदान:
टीरी माराज की औ सेवा बोदान:

फेर फ्यूंळि फूल की गाथा सुणाई जान्दि थै—

आसन्ती का पाटा गौंलु मैं बासन्तिका पाटा
सौरारू का पाटा गौलु मैं गौरारु का पाटा
हे राजा धामदेव की जरमी स्या फ्यूंळि रौतेली
हे आम जैसी आम छै वा दिवा जैसी जोत
हे नौणि जी लुटकि जरमी फूलों सी कुटकी
हेमंगल्वाडा तितरि जरमीं ढिस्वाळ सी ऊंमी।

श्री शिवचरण अर स्व० बचनदेई जना बेडा कलाकार शिव मन्दिरों मां झुरमुर मु देवता जागरण को गीत गान्दा छा–

बीजी गैन बीजी गैन खोळि का गणेश जी
व्हेगे देवतों असनाणा बेर जी।
चला देवतों ढोलू समुन्दर जी
व्हेगे देवतों असनाणा बेर जी

चैती गायन मा सबसे खासगीत होन्दो छौ सदेई गीत। ये गीत तैं कुमाऊं मा गोरी धना अर बाळा सदेउ का गीत का रूप मा गांन्दा छा। सदेई गीत अनाथ सदेई अर सदेउ की कथा पर आधारित छ। बाळि उमर मा ही द्वी भै बैणा अनाथ व्हेगे छा। सोरा–भांरू न सदेई को ब्यौ करि दूर मुलुक भेज दीन अर वौंकि घर कूड़ी को आपस मा बंटवारू करि दिनि। अनाथ सदेउ पूरा गौं मा मांग– मांगी गळखि खाणू रै। हर साल चैत का मैना जब दूयूराणि–जिठाण्यूं का भै भिंटोळी लेकि औन्दा छा त विचारि सदेई अपणा भै को बाटू हेरदि ही रै जांन्दि छै। बारह बर्ष बाद एक दिन बाळों सदेउ अपणि बहण सदेई का सैसुर पौछंद त सदेई न भावुक ह्वे कि अपणा सैसर्यू मा बोलि कि तुम बोल्दा छा न कि मैं झूठ बोल्दू कि मेरू बि भै छ। देखा आज पौंछिगे मेरू भै। द्यूरणि जिठणि सदेई का भै देखी जळण लगिन अर तौन सदेउ का खातिर खीर पकाई अर वैंमा जैर मिले दिनी। खीर खान्दि वे जैर से सदेउ मरि गै सदेई न जब अपणो भै देखी त वीन बि पाणि की गागर मुंड मा धरि, ताल का छोड़ गै अर खाळा फांळ मारि प्राण घात करि दिनि। यो गीत लोक का क्वांशा गीतु मा प्रसिद्ध गीत छ–

दूजा ग्रासन छाळा फाळ दीनी वै हो
हे जित सदे बैणि गागर उठाई जी
सदै गैल पाणी नौं का ताल जी
सदै बैण त ताल डूबो गई जी
सदेउ भै त कफू चाडो व्हे गे जी
सदेई बैणी कि मेल्वड़ी बणी जी

ये का अलावा बास बास मेव्लड़ी, रामा पिरमी, राजा हरिश्चन्द, हरण कश्यप, राम बलराम, का गीत बि ये मैना गयेन्दा छा। ये मैना औजी लोग गांव की दिशा की पैलि सन्तान पुत्र होण पर धियाण का गौं मा जैकी तीन दिन का दिशा बढै अनुष्ठान का अतिथि बणदा छा यीं बढै मा बि तीन दिन तक चैती गीत गांदा छा। कुर्माचल मां बि यन्नी परम्परा छै। पर यूं गीतों को नौ रितुरैण छौ जु अलग धुन मा गयेन्दा छा। रितु रैण का द्वी गीत भौत लोकप्रिय छन–

(एक)

एक ध्याण देळि पर बासदा कौवा से बोल्दी
देळि थैं कव्वा किलै वांस छै
नी बास कावा कांव
बाबु होना त बालौउं औना
ना बास कावा कांव कांव
को मागी चेली कै पास औना
ना बास कावा कांव कांव
बैणी हुनी त संग लि औना
कोउ च तेरो धाम

(दो)

धियाण बसन्त ऋतु औण पर अपणा मैत से भिटोली औण की आस करणी–

रितु ऐगे हेरि फेरि, हावै रंगीली चैत की
याद मैके भौत ऐगी या आपणा मैत की
भिटोली को मैनों मितैण नारैण एगी रितु रैण।
भिटौली/आला परम्परा मा हर हालत मा भै लो स्वाळी, पकौडी, अरसा, गुलथ्या, कणकू लेकि चैत का मैना धियाण का ससुराल जांदा छा। निरमैत्या धियाण तैं क्वे भी भिटौली लेक नि जान्द छौ।

चैत का मैना फूलदेई सबसे अलग छ। चैत की संग्रान्द से लेकर आठ गते चैत तक गौं का छोटा–छोटा नौन्याळ घाम औण से पैली सैरा गौं की देळ्यो मां फूल डालदा छा। यिं फूल कुरौंजी मां मेटी घरेन्दा छा। व्यखुन बगत या झूरमुर मां। फूल डाळदा द बच्चा अलग अलग इलाको मां अलग अलग गित गान्दा छा।

1. **केदार घाटी:**
   घोघामाता फूल्यां फूल
   देदे माई दाळ चौंळ
   वल्या खोळा–पल्ळा खोळा घोघा नचायो
   घोघा पुजारी म्वारूं न तडकायों
2. **लस्तर घाटि:**
   घोघा माता फुल्यां फूल
   घोघाबोल्दों कींगा फूल

हम बोल्दा फ्यूळ्या फूल
ताम्बै तौली फरफरू भात
खडु उठा छोरों खुलिगे रात

3. **कुमांउ एवं दुशान्तः**
फूल देई छम्मा देई
दैणी द्वार भरी भकार
यीं देळी तैं बारम्बार नमस्कार!

पुंगड़ू अर जंगल मां फूल निकाल्दी दा यन गीत बि लगदा छा:

1. **केदार घाटीः**
चला फुलारी फूंलों क
सौदा फूल बीणला
म्वारूं का जूठा फूल ना बीण्यां
भौंरु का जूठा फूल ना बीण्यां

2. **भिलंना घाटीः**
चल फुल्यारि फूल्लुकः
देवता औंद झुल्लुकः
सेरा लाइ सीधी कूल
पार्या डांडा घाम लैगि
अब धोयन्दा सादा फूल
चल फुल्यारी सटबट घौरः
उन्ड फुन्ड बाघै की डौरः

देळि-देळि पर फूंल डालण का बदला सभी घरू से दाल, चौंल गुड़, घी, तेल, मिर्च, मशाला और नमक भेंट बि मिलदि जै को केळाख आठवां दिन जगंल की तरफ भोज पकोण मा इस्तेमाल करे जान्दो। लजीज पकवान बणौन्दा अर बच्चा बाग को स्वांग गणैकि एक दोसरा तैं डरौण को नाटक भी करदा।

केदार घाटी मां ये अवशर पर हर गौं या खोळा की एक डोली होन्दी जै तैं घोघा या घोघा की डोली को नाम दियों च। घोघा असल मां स्त्रीरूप विधाता को च जैं तैं बि माता भी बोलदन। माणे जान्दों कि संसार मा सभी बच्चु भेजणो काम घोघा माता करदी अर बाल पन मां तौं तैं हंसौणः, कुतग्याळी बि देन्दी। यीं घोघा डोली गौं का दानी लोगु द्वारा बणाये जान्दी छै। अन्दरवाडी गौं कि डोली कै जमाना मा स्व० बाववानन्द सेमवाल द्वारा बणये गै छै बल। सबसे चमत्कारी डोली रांसी गांव की माण्या जान्दी छै बल। लड़का लोग धौती पैरी डोली तैं कान्धि मां धरि खौळु-खौळु नचौन्दा अर बि देवता औण को अभिनय बि करदा। फिर नंवा दिन या डोली भितर धर्‌ये जान्दी।

कालीमठ गौं मा डोली नि नचयेंदि। यख लक्ष्मी मन्दिर का भैर धरयां छोटा छोटा ढुंगा ही घोघा माण्या जान्दा अर बि खोळु-2 नचाया जान्दा। पिछला दस बरसु बटि होली हिमालय नौं की संस्था गुप्तकाशी मन्दिर मां हर वर्ष फूलदेई उत्सव को आयोजन करण लगी। ये आयोजन मां पूरा इलाका की 70-80 घोघा डोली भाग लेंदन। येही तरह को आयोजन कलश संस्था रूद्रप्रयाग तथा के०न० भट्ट मैमोरियल स्कूल जखोली वळा बि कई वर्षो से करणा छन। ये वर्ष त राजभवन मां भी बच्चों द्वारा फूलदेई उत्सव मनाया गै।

फुलदेई उत्सव मां इना कलात्मक और उत्सवी तत्व मौजूद छन कि यो अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को उत्सव बणि सकदु।

चौथी परम्परा बीं माता की च। मल्ला कालीफाट का अन्द्रवाडी द्यूसाल अर रवि गौं मां हर तेसरा बर्ष बीं माता को पन्द्रह दिनौः को जागर अर पूजा अनुष्ठान होन्दः। चैत संग्राद से लेकि पन्द्रह ति तक चलदः। ये अनुष्ठान को आयोजन संतान की आश बलि क्वे बि दम्पत्ति कर सकदि। हर दिन बीं माता का सामणि रात मां बीं माता/विधाता का जागर गायेन्दा। जागर की शुरूआज तुलसा, बींमाता को दोसरू नौं से होन्द। लेकिन ये से पैलि तीर्थ स्मरण बि गायै जान्द।

हाथ तुलसा, पांय तुलसा सिर जम्पे माल
तुलसा को रंग भूलौ श्रीकृष्ण गोपाल

जागर गायन मां श्रीकृष्ण का जन्म और कंस से संधर्ष की गाथा गाये जांद। बीच-बीच मां धुंधरू जोली (घुंघरू जोड़ी) को जागर और मंचन भी करे जान्दू। घुंघरू जोली एक सन्तानहीन स्त्री की कथा च। अपणि होण वाली संतान का वास्ता विचारि जनानि एक जोडी घुंघरू बणौन्दी अर हमेशा अपणा पागड़ा पर धरदी। लोग तैंकु ठठा लगौन्दा। एक दिन बींमाता तैं तैं दया करीक सन्तान को वरदान दे देन्दी।

❑❑

फुलदेई

डॉ० नन्दकिशोर हटवाल

जन्म : ग्राम तपोंण, पो० लंगसी, चमोली-गढ़वाल.

कृतियां : उत्तराखण्ड हिमालय के चांचडी गीत एवं नृत्य, चमत्कार (बाल कहानी).

सम्प्रति : माध्यमिक शिक्षा विभाग मा कार्यरत.

भारतीय परम्परानुसार पूरा भारत मा बसन्त को आगमन बसन्तपंचमी का दिन बटी माणी जांद पर अपणि अलग भौगोलिक स्थिति का कारण बसन्त पंचमी का दिन पूरा उत्तराखण्ड मा ह्यूं अर ठण्ड का दिन ही रौंदा। वानस्पतिक अर प्राकृतिक रूप से बि बसन्त का आगमन की क्वे सूचना ये दिन नि मिलन्दी। जबकि बसन्त की प्रतीाा ये पर्वत प्रदेश का रैबास्यों तैं बड़ी बेसब्री से रौंद। हो बि किलै ना, यो बसन्त ही छा जो यीं धरती को श्रृंगार करद। कौपांण वाळि निगुरि ठंड से मुक्ति दिलौंद। पतझड़ से खणखणा होयां डाळों पर क्वंपळा मौलौंद, पीला घास का पात हर्‌यां ह्वे जांदा। अर जो सबसे बड़ो परिवर्तन औंद वो यो कि ये मौंका पर बनि-बनी का फूल खिलि जांदा। खास कै भीटा पुंगड़ों मा जब फ्योंळि खिलदि त ये तैं बसन्त का औंणै की सूचना माणी जांद।

फागुण का मैना का आखिरी दिनों मा फुल संगरादं का वास्ता रुड्या हथकण्डी फुलकण्डी अर छोटी-छोटी टोकरी बणे तैं ब्योचर्णों तैं गौं-गौं जान्दा। फागुण का मैंने की आखिरी ब्यखुन नौना पुंगड़ौं का किनारों, बाग-बगीचौं अर बंणों मा फ्योंळि, बुरांश, लया, आड़ू, पंय्यां, सेमल, सेब,धौला, ग्वीराळ जना बनि-बानि का फूलों तैं ल्ये तैं फुलकण्डी मा पाणी का छींटा मारी भैर टांकी देंदा। दुसरि तरपां ननतिन रातभर फुलसंगरांद कि सब्येरी को जगवाळ कना रौंदा।

दूसरा दिन सुबेर-सुबेरी नोनौं की टोली फुलकण्डी ल्ये तैं म्वोर-म्वोरों, घौर-घौरों फूल डाल्दी। फूल डाल्दा-डाल्दी गंदा बि-

फुल-फुल मायी दाळ दे चौंळ दे, दाळ दे।

ये का बाद फूल डळीं देळि का चौक-आंगन मा गोळ घेरा मा बैठी जांदा अर गांदा-

फुल-फुल देवी, बड़ी-बड़ी पक्वड़ी,
फुल-फुल माई, दाळ दे चौंळ दे।
फुलदेई-फुलदेई, तुमरू भकार भ्वरि जै।

फुलदेई-फुलदेई हमारा टुपरा भ्वरि जै।
फुलदेई-फूल देई फुल संगरांद
सुफल करो नयो साल तुमकू श्री भगवान।
रगींला सजीला फूल, ऐगीं
डाळा-बोटळा हर्या ह्वेगीं।
पौन-पंछी, दौड़ी गैना,

डाळ्यूं फूल हैंसदा ऐन।
तुमारा भण्डार भर्यांन,
अन्न-धन्नल बरकत ह्वैन।
औंदा रओ ऋतु मास,
औदा रओ सबकू संगरांद।
बच्यां रौंला तुम हम त,
फेर होली फुल संगरांद।

तब वे घौर वळा एक भाण्डा मा ग्यूं, चौंळ, कौंणी, झगोरु, ल्योंदा अर नौनों की टोकरी उंद डाल्दा। पैली रिंगाल की टोखर्यू मोळ माटान लिपि तैं कमेड़ा, हल्दा कि पिठैं न सजौंदा बि छा।

उत्तराखण्ड का कुछ क्षेत्रु मा सात दिन तक अर कखी-कखी मैनाभर तक बि फूल डाल्दा। फूल डालण का बदला जो सामाग्री मिल्दी वेकू उपयोग घ्वोगा कि पुज्ये मा ह्वंद। चैत का मैना कै दिन बौंण मा जै तैं नौना सामूहिक रूप से घ्वोगा की पूजा करदा अर हलुवा बणौंदा। घ्वोगा ग्वेरु को द्यब्ता छ जो शायद बाघ छ। बदलेंदा बक्त का दगड़ फूलदेई मा अलग-अलग तरीका से यीं सामाग्री को उपयोग ह्वोंण बैठी।

पैली फुल संगरांद का दिन बटी औजी चैती गांण की परम्परा बि ह्वोंदी छै। फूल संक्रांति का पर्व बटि ध्याण्यिों तैं आलू-कल्यों द्योंण कि परम्परा बि शुरू ह्वे जांदी। कुमाऊं मा ये तैं भिटौली बोल्दा। फुल संगरांद का दिन बटी ध्याणी भिटौली को इंतजार शुरू करी देंदि-

डांडू फूले फ्योंलड़ि,
गाडू बासे न्योलड़ि।
मैनो आयो चैत को,
खुद लींग च मैंत की।
हरी ह्वैन डांडी फुलु की,
मैं खुद लगीं च भुलुं की।
कब मैत मी जांदु नी,
बबा मैं बुलोंदु नी।

फूल संक्रांति का दिन बटी ध्याणि 'दीशा-भेंट' का वास्ता अपणा मैती 'औजियों' को इंतजार बि करण बैठदी। मैती औजी ये दिन बटी दीशा भेंट तैं जांदा छा।

ये पर्व तैं बनि-बानि का पौराणिक प्रसंगों दगड़ा जोड़ी तैं बि देखी जांद। पार्वती द्वारा शिव तैं प्राप्त कन का दिन यानि पार्वती द्वारा शिवजी तैं पुष्पार्पण दिवस का रूप मा बि ये पर्व तैं देखदा। और बि कथा जनश्रुति ये पर्व का बारा मा प्रचलित छन। एक जनश्रुति या बि छ कि पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती न शिव तैं पति का रूप में पौंणों तें बारह बसन्तों तक कै किसम का फूल ल्हेकि शिव की अराधना करी अर चैत का मैंना संगरांदी का दिन शिवजीन पार्वती तैं पत्नी का रूप मा स्वीकारी।

अब त सामाजिक आर्थिक बदलाव का कारण ये पर्व मनोण का तौर तरीका भी बदलणा छन। हम ये पर्व तैं फूलों को पर्व, प्रकृति से जुड्यूं बसंत का स्वागत सत्कार को त्यवार बि बोलि सकदा। यीं संक्रांति बटी भारतीय संस्कृति को नयो साल बि शुरू होंद। ये वजह से यो दिन साल को पैला दिन का रूप मा बि मनायी जांद।

❑❑

चैत की परम्परा अर त्यवार

राकेश मोहन कण्डारी

जन्म : 30 जून, 1971
शिक्षा : एम०ए० अंग्रेजी, हिन्दी, बी०एड० व पत्रकारिता स्नातक
प्रकाशन : पुनाड़ से रुद्रप्रयाग
सम्प्रति : प्रभारी प्रधानाचार्य, रा०उ० मा०वि० पालाकुराली, रुद्रप्रयाग
सम्पर्क : मो० : 8650416124.

चैत का मैना आन्दिसार पाड़ की डांडि-कांठि रंगिला पिगंला फुल्लुन लक-दक्क हवै जांदिन, फ्यूंळि का फुल्लुन सैर्या भीटा-पाखा पिगंला, अर बुरांशी का फुल्लुन सैर्या बण लाल चचकार हवैं जांदन। चैत का मैना तै पाड़ी लोखु को नयु वर्ष को पैलो मैना, बि मणै जांद, किले कि चैत प्रतिप्रदा बटै, पाड़ी नयु बर्ष बि लग जांद, चैत को मैना द्यो देवतो को मैना भि बोल्ये जांद, चैत का मैनो का नवरात्रा बड़ा पवेत्तर मने जांदन, ये ही कारण सि चैत का मैनो को नवरात्रों मा देवी का मन्दिरू मा बड़ी भीड़ रैन्द अर कै थौळ, मेळा उरैदिन, पाड़ का जै भि दिशा मा दुर्गा देवी अर दक्षिण काली का मन्दिर होला चैत का मैना यू मन्दिरू मो कौथिगेरू की लंगत्यार लगी रैंद, यां का अलावा चैत फुल्लु को मैनु भी छ, त सैरया पाड़ी ईलाकों मा चैत का मैना फुल्लु का उच्दव त्यवार उर्रेदिन, हर गौं कि छवट्टि बाल कन्या बानि-बानि का फूल कट्ठा करी कि हर घौर की देळि-देळ्यों मा फूल डाळदिन फूल डाळणै कि या परम्परा कब अर कैल शुरू कै होली यु त पता नी पर इथगा बोल्ये सकदु कि या परम्परा साढयूं पुराणि चा। कखि-कखि सैर्या चैत का मैना त कखि आठ दिन तक फूल डाळणै अर सगुन गीत लगाणै की परम्परा आज भी जीवित छ।

पाड़ मा चैत को मैनो बेटी-ब्वारियों तैं सर्मपित छ, सैरास मा सासु का झझकारा, काम धन्धा को बोझ, गाजी, बाछी खेती किसाणी का दन्दोल से दु:खी बेटी, ब्वारी वड़ी वेसब्री से चैत का मैना को इंतजार कनी रैन्दीन, कि कब चैत को मैनो आलो अर वु अपड़ा मैत जाली।

पाड़ मा आज भि या परम्परा जीवित छ लोग चैत का मैना जरूर अपड़ी ध्याणियों तै मैत बुलांदिन अर कपड़ा लत्ता अर कल्यो दे कि विदा करदिन, आज भी पाड़ मा बुड्या ध्यांण तै चैत का मैना का कल्यो जरूर भेज दिन।

चैत का मैना पाड़ मा चैती गीत लगाणै की परम्परा छ, हांलाकि नया जमाना अर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव का कारण जरा जरा कै धीरा या

परम्परा खतम होणी छ पर घर गौं मा आज भी औजी अर वाद्दी चैती पसारा गीत लगादिन अर कुलाचार बोलदिन, चैती गीतु मा ऋतु वर्णन, खैरी अर विपदा का गीत–बेटी का ब्वारियों का खुदेड़ गीत, फ्यूंळि, जस्सी, सदेई, सरू कि गाथा का गीत लगाऐदांन।

चैती गीत

चैती गीत लगाणै कि परम्परा सदियों पुराणी छ, जुग–जुग बटिन हमारि लोक परम्परा का वाहक औजी अर वाद्दी चैती गीत गाणा छन, यूं गीतु मा लोक मंगल की कामना, रंगिली पिंगली बसन्त बार को वर्णन, बेटी–ब्वारियों की खेरी, विपदा अर दन्दोळ को वर्ण। मायादारू की माया का गीत, अर जब ढोखरा, पुंगणो का तिराळ ढिसाळ वीटा पाखों पर फ्यूंळि का फूल खिलदान वण मा कफ्फू अर हिलांस बासदान बेटी ब्यारि मैत की याद मा व्याकुल हवै जांदिन, मैत की खु मिटाण का वास्ता वेड़ा लोक चैती गाथा सुणांदन, यूं चैती गीतु मा दु:ख विपदा, सैरास की खेरी, सासु का व्यंगवाण को वर्णन भी रैंद, चैती गीतु को शुभारम्भ कुलाचार से होन्दो।

कुलाचार

कुलाचार मा दान, वंशवृद्धि अर लोक की मंगल की कामना का भौ रैंदिन, वेड़ालोग घौर–घौर मा जैकि वशांवळि की जैकार, खेती किसाणी अर पशु वृद्धि की कामना को गीत लगांदिन।

मंगलाचार, मंगलाचार, वड़ा दरबार।
बेटों को राज बढे,
पोतान फूले फले,
कुल का देवता नेह करे,
दाता गुण से भरपूर रयैं,
छत्री का हाथ मा शक्ति रयें,
नंगौ ढकोण, भूकों पत्यौंण मराज,
नंगा मा मास नी, डला मा घास नी,
जै जै लान्दु मराज ..... जै जै लान्दु मराज।

चैत का सैर्‌या मैना वेड़ा, वाद्दी अर औजी लोग अपड़ा साज बाज ढोल, दमौ, हुड़का डौंर थाळी का दगड़ा घौर–घौर जैकी गीत लगांदन यु चैती गीत सुवेर वटि व्याखुनि दां तक लगाऐ जांदन, सुवेर का वगत का गीतु तैं प्रभाती अर व्याखुनी दां का गीतु तै श्याम कल्याणी बोले जांद।

प्रभाति

रबी भानूं काठौं चढ़ी ऐगेंन देवी सीता जी,
वीजी गैन पंचनाम देवा हे देवी सीता जी।

श्याम कल्याणी

जें माता सकल भवानी,
जल–थल उदयी भवानी,
जै माता सकल भवानी,
द्यूळ थाल कपास की बाती,
सवा गज की जोत जगाई माता सकल भवानी
जै जै माता सकल भवानी।
माता को रिंगदो छत्तर चढ़ायो जै माता सकल भवानी
दवतो की तु ध्याणी भवानी माता सकल भवानी

कुलाचार

हे..... ठाकुर जी.....
सुरीज काठों मा चढ़ि ग्यै,
पंचनाम द्यवतों को सुभिरण करदो
खौली का गणेश को सुमिरण करदो,
तुम्हारा भण्डार भरयां रयां,
अन्न का भकार भरयां रयां,
तुमरौ राज बढ़ै,
बेटो को ताज बढ़ै,
नाती पूत सन्तान राजी रयां,
गौ बढ़ै गाजी बढ़ै,
अन्न का भण्डार भरयां रयां,
दाता का हाथ ठाडा नि हुइयां....।

सगुन गीत

आवा कागा, बैठा कागा हरियां बिरिछ
वोल कागा वोल चोदिस सगुन
त्वै द्यूलो कागा, मैं दूध भाती पूरी
वोल कागा वोल कागा चौदिस सगुन
विचारा ब्रहमा जी काग की वोली
सगुन कागा सगुन बोल.....

जय-जयो शुभ घड़ी आई,
जय-जयो शुभ दिन आयो,
मटटी को दीवा कबास की बाती,
तिलु को तेल जागो दिवा सूरी-पूरी रात,

फुलदेई त्यौहार

चैत का मैना तैं रंगिलो चैत वी बोले जांद किलै कि ये मैना डांडि काठ्यिों मा बन्नि-बनि का फूल खिल्या रैंदन, गढ़वाळ मा चैत का मैना छुट्टा-छुट्टा बाला अर कुंवारी कन्या वानि-वानि को फूल चूण्डि की तै देल्यों-देल्यो का रोज फूल डालदिन, यूं फूल्लु मो फ्यूंळि, बुरांश, सिलपाड़ा, पाषाण भेद, गैंदा, गुलाब का फूल अर जख जु फूल मिल साकु, बच्चो की टोलि देल्यों-देल्यों पर जैकि फूलदेई छमादेई देणी द्वार भर भण्डार गीत लंगादिन, अर दगड़ा मा अपड़ा धोधा देवता तै भी नचाणा रैंदन, धोधा फुल्लु को देवता मणै जांद फुलदेई त्यवार को अलग-अगल ईलाको मा अलग-अलग रिवाज छन रूद्रप्रयाग, चमोली मा चैत मैना का आठ दिन तक बच्चा फूल डालदिन आठवां दिन अठवड़वा पर्व मनाऐ जांद, लोग बच्चो तै चौल, गुड, तिल, फल अर रुप्या भेट करदिन। आठवां दिन अठवड़वा पर्व पर बच्चों को समुहिक भोज का दगड़ा समापन्न ह्वै जांद वही पौड़ी का ईलाकों मा फुलदेई सैरया चैत का मैना मनाऐ जांद।

कुमांउनी

फुलदेई फुलदेई तुमार भकार भरी जैं,
हमार दुपर भरी जै, फुलदेई फुलदेई
फूल-फूल डेली यो डेली कैं नमस्कार
दैण डार भरी भकार।
तू डेली अली रै, मैं चेली पूजनी रौ,
तू डेली लो नमस्कार।

हरियाली पूड़ा

हरियाली पूड़ा चैत का मैना को प्यार च, यु त्यवार चमोली जिल्ला को नौटी गौं मा उर्रेद, नौटी गौं मा नंदा देवी को मन्दिर छ, हरियाली पूड़ा ध्याणियों को व्यवहार छ, सैर्या गौं को लोग अपड़ी ध्याणियों तै मैत बुलदान अर ऊं तै भोज दै कि कल्यो का दगड़ा विदा करदिन।

अंयार पूजा

अंयार पूजा चैत का मैना 20 गते उर्रे जांद, यु उत्सव खेती-किसाणी पशुपालन करण वळा उयौदन, चैत का आन्दिसार डाळि-बोट्ळ्यि मा मौळयार ऐ जांद, अंयार की कुंगली पत्ति विषधारी होन्दीन, अपड़ा पशुधन की रगछा की खातिर किसाण लोग अंयार को दही, नौण कट्ठा करी कि हलवा, पूरी, खीर को भोग लगादिन अर सामुहिक भोज को आयोजन भि करै जांद, ये औसर पर एक स्वांग को आयोजन भि करैं जांद, जै मा एक आदिम बाघ बणदो, अर अपड़ा गिच्चा पर भुटखाजा भौरि कि हूँ, हूँ, हूँ कि आवाज करदो, गौं का लोग वै का पिछने जगदु गोसु चुलांदीन।

सण्टा

चैत का मैना पाड़ की सब्बि बेटी-ब्वारी अपड़ा मैत जरूर जांदिन, नयि ब्योलि तैं चैत का मैना सासु को मुख देखण वर्जित छ, ये वास्ता चैत को मैनु लगण से पैली ब्वायू तै मैत भेज्ये जांद पर कबि इन समय भि आन्दु या क्वी भौत बड़ी मजबूरी हो कि ब्वारि मैत नि भेजे सकि त इनि परम्परा च कि सासु अर ब्वारी आपस मा क्वी कपड़ा, अगुंठी, कड़ा, कन्दुड़दरा आपस मा सण्टें दिंदान।

बीं आगण

चैत मा ध्याणियों तैं मैत बुलाण को रिवाज छ, चैत का मैना बीं माता तैं न्यूतु देकि घौर बुलाऐ जांद अर पूजा पाठ करी की उत्सव का रूप मा कपड़ा लत्ता अर कल्यो देकि विदा करण की परम्परा छ, बीं को मतलब छ वरदानी मां, विधाता, सन्तान देण वाली मां, हर तिसरा वर्ष उर्रेण वांळि यीं लोक परम्परा का अनुसार गौं को क्वी एक मवासू बीं माता तै अपड़ा घौर बुलाणको न्यूतु देन्दु, इन बुलै जांद कि जु मौ बीं माता तैं न्युतू देन्दू वै का घौर मा सन्तान की प्राप्ति होन्दी।

❑❑

बीं आगण हर्यळि बांटद चैत

बीना बेंजवाल

फूल संग्रांद से बिख्वौत तक हरेक दिनबार तैं सौदा-सौदा फूलों कि तराँ संस्कृति कि सिंयारी पर गंठ्यौंण को चैत को फुलारी मांगळ-जागरोंन उलछुल भरीं अपणी फुलकण्डी ल्हीक जब हमारि डेळ्यूं पर पौंछद त् हुगड़ि जंदन हमारा द्वार-मोर, कंदुड़ि अर जिकुड़्यों पर लग्यौं ताळा। 'फुलफुल माई...' बोली भैर डेळ्यूँ पर फूल सजौंदा फुलारी भितर मन तैं बि फ्यूँली-बुरांस का रंगोंन लपोड़ी रंगमत्त बणै देंदन। धियाण्यों कि भेंटोली बंधेण लगदिन। नौबत बजण बैठदि। बसंत कि कलबली सार का ये चैत का मैना हमारा गौं द्यूसाळ, ममाकोट अंद्रवाड़ी अर बुबाकोट यानि पापा जी का ममाकोट रबिगौं 'बीं अगेंदि'। 'बीं आगण' मतलब 'बीं माता' तैं जागरों मा मैत न्यूतण। बीं माता यानी विधाता। जो संतान को वरदान देण वळि माता छ। चैते संग्रांद बिटि 13 या 15 दिन तक बीं माता जागर लगदन अर फेर धियाण कि तराँ बिदा कर्‌ये जाँदि। खास भौंण मा गये जंदा यों जागरों मा इनि अद्‌भुत फाक्ति होंदि कि भैर-भितर दिब्यता को उद्यो ह्वे जंद।

हमारा गौं मा जाख अर विंध्यवासिनी का द्यूळ बीं अग्ये जँदि। गौंकि जु मौ संतान प्राप्ति का वास्ता बीं आगदि। स्या सबसे पैलि चोपड्डु माटु ल्यौंदि। ते माटा गूंदी तैं चौकला मा गणे ा जी, बीं माता अर बीं माते चेली बणये जंदिन। तब वे चौकला मा अर टोखरी, पुड़खी कोणज्यूँ पर जौ बुत्ये जँदन। एक गत्ता पर बीं माता अर वींकि चेली कि आकृति उकेरी वीं हर्यळी दगड़ि रख्ये जँदि। बौडा श्री घनश्याम देवशाली जी बीं माता अर वींकि चेलि कि आकृति बणौंदन। पैला दिन हरिद्वार बिटि क्यदारे कोड़ी तक दिवा बरतदन। सब्बि द्यू-द्यबता सुमिर्‌ये जँदन। अलग-अलग दिन देवगाथा का हिसाब से जागर लगदन। जैमा भगवान कृष्ण कु जनम, गौरा कु जनम, वींकु बाळपन, घुंगुरजोळ, चम्पा डाळी, गौरा-शिव को ब्यो, बारामासा गये जँद। सुबेर पूजा होंदि अर ब्यखुनि आरती। फुलारी फूल ल्योंदन। माळा बणौंदन। तब बीं माता तैं बिजाळये जँद—

उंचा-उंचा फूल कमरि उंचावा
निसा-निसा फूल कमरि न्यूड़ावा

जन्म : 17 नवंबर, 1969 (देवशाल)
कृतियां : मुटठी भर बर्फ, कमेड़ा आखार.गढ़वाली-हिन्दी शब्दकोश.
सम्प्रति : केन्द्रीय विद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल
मो० : 9458343964.

उंचा-उंचा फूल घुग्यास्यूँन ब्यूणा।
सौदा-सौदा फूल सिंयारी गंठ्यावा
बासी-बासी फूल स्यमली स्यळावा
पैलि कि सिंयारी तुम बीं माता चढ़ावा
तब कि सिंयारी तुम चेली तैं चढ़ावा।

यों जागरों मा बाळा से लेकर दानों तक सब्योंकु उत्साह देखण लैक रौंद। छठा दिन गौरा का रांसा लगदन-

गौरा को मंगण्या आये कैलास को शम्भु
कैलास को शम्भु मैं द्यौणो ना बोल्या
भंगफुक्या जोगी क बुबा मैं द्यौणो ना बोल्या
हिंया का हिवाळा बाबा मैं द्यौणो ना बोल्या।

रात आठ बजि बाद गौं का बीं आगण वळि जगा पर कट्ठा होंदन। यि जागर कखि लिख्याँ नि छन। गौं का दाना-स्याणों तैं यि मुखागर छिन। रात बीं माता तैं स्यवौंदन। सुबेर पूजा करी बिजाळदन। द्यूसाळ पिछला साल ल्हियेगे छे बीं। ये साल अन्द्रवाड़ी छन आगणा। पन्दरा-सोळा साल बिटि बीं का जागर गाण वळि मामी जी श्रीमती अरुन्धती सेमवाल जी से या जानकारि मिलि।

बिसर्जन से एक दिन पैलि पुत्रकामना वळि जनानि अपणा-अपणा द्यू बाळी रातभर वे पर नजर रखदिन। सुबेर चार बजि उठी न्हये-ध्वये जगदा द्यू अपणा डेरा ल्हिजे पूजा थान मू रखदिन।

आखिरी दिन पयां कि फौंग्यूँन बीं माता का हाथ-खुट्टा बणौदन। बीं माता अर वींकि चेली पर गौणा, नया कपड़ा साड़ी, बिलौज अर चुन्नी पैरोंदन। चेल्या नाक पर लौंग पैरोंदन। सोना गौणा लोग अपणा देंदन। पैलि पूजा-हवन होंद फेर बाजा-गाजा का दगड़ा स्वस्ति वाचन करदा-करदि बीं धारा पौंछदन। बीं को चौकलु, हर्याळी का पुड़खा, टोखरी सब मुंड मा ल्हिजँदन। हर्यळिन झक्क तौं टोखर्यूँकि सोभा देखण लैक होंदि। ये मा खास ध्यान देण वळि बात या च कि स्यळौणा वास्ता ल्हिजांदि दां बीं माता को मुख गौं कि तरपां होंद। बिसर्जन का दिन बीं धारा मू बीं स्यळोण का बाद वापस मिल्याँ गौणों तैं लोग बीं माता का परसाद रूप मा सम्हाळी देंदन। वे दिन सब अपणा-अपणा घर बिटि छोळि र्वट्टि, गुलगुला, स्वांळी-पकौड़ी, मरछो हलवा बणै बीं धारा ल्हिजँदन फेर परसाद का रूप मा बाँटदन। हर्याळी तोड़ी एक-दुसरा मुंड मा धरदि दां 'स्यमन्या-स्यमन्या' बोलदन।

लोक का यि उत्सव मेलजोल का दगड़ा हमारि आस्था अर वि वास का प्रतीक छन। बीं माता यि जागर हमारा लोक कि अनमोल धरोहर छन। ❑❑

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का मौका पर धाद की पढ़दरि रश्मि सती का तैयार कर्या रेखांकन धाद का पढ़दरो का वास्ता

बीं माता जागरों मा 'घुंगुरजोळु'

• प्रस्तुति : श्रीमती राधा देवशाली

[बीं माता का जागर गाणै परम्परा आज बि छ, यि जागर बीं आगण पर खूब गये जांदन, यि जागर अपणा आप मा पूरी कथा दन जो कखि लेखीं नि मिलदि, यि जागर गै-गै कि सूण-सूणि कि आज तक लोक मा प्रचलित छन, बीं माता को यो जागर घुंगुरजोळु देवशाल की श्रीमती राधा देवशाली का श्रीमुख बिटि सूणि कि तौंकि नौनि श्रीमती बीना बेंजवाल न ये अंक का वास्ता खासकरि संकलित करीं छ - संपादक]

घुंगुरजोळु गांदि दां कंदुड़्यों मा बजण बैठदन ठुमुक-ठुमुक हिटदा बाळा भगवान कि गुंदख्याळी खुट्यों पर बजदा घुंगूर।

बीं माता जागरों मा कथा औंदि कि सारदा बामणी अर नारद ऋषि कि क्वी संतान नी छ। एक दिन द्यूराणी-ज्यठाणी वखळा मा कूटणी रौंदिन। एक लुवार्यौण घुंगूरों कि जोड़ी बेचणों ल्यूंदि। द्यूराण-ज्यठाण मजाक उड़ौणों वीं तैं जाणि-बूझी सारदा बम्यौण मू भेजदिन। औति सारदा कि जिकुड़ि बबरै जंदि। वा अपणि सीली वबरी जैतैं बुकारूण रोंदि। ब्यखुनि दां नारद ऋषि घर औंदन। सारदा तैं रौंद देखी कारण पूछदन। सारदा घुंगूर वळि बात बथौंदि अर बामण मू अपणा जोग का कागज दिखौणो बोलदि। नारद ऋषि भौत समझौंदन कि यीं बुढ्यांदि दां संतान कि आस करण बेकार छ। पर सारदा कि जिद का अगनै तौंकि एक नि चलदि। जोग का कागज ल्हिजै बामण मू जांदन। बामण मुंड ढगढ्योंद। जागरों का अनुसार फेर सि बिधाता मू जांदन। सारदा का घर जरमणा वास्ता क्वी बि बाळो नि पैटद। फुथ्यै-पथ्यै मुस्किल से एक वाळा तैयार होंद। बिधाता वेतैं समझौंदि कि सारदा त्वे उछ्याद करण नि देलि, दूद-घ्यू या बिसगौण खतण नि देलि त् तु वापस ऐजै। सारदा बामणी पौछुपा लांदि पिछनै-पिछनै जैतैं सब्बि छ्वीं सुणणी रैंदि। बिधाता कि किरपा होंदि अर सारदा बम्यौण कि गोद भरि जँदि—

फटिंग वखळी स्या खैर्वा च गंज्याळी
निंगाळा फटगौणी निंगाळा छंटणी
सौमान्या ठकर्वाणी तुम घुंगूर ल्हियाला
घुंगूर ल्यौली स्या जट्ठी ज्यठाण

द्यूराणी–ज्यठाणी दिगती लगौंदी
दिगती लगौंदी सि चुगली सारदी
आँखी झपज्यौंदी सि भौंऊं बबलौंदी
सारदा बम्यौण स्या जनम कि औती
सारदा बम्यौण स्या बुकारूण रौंदी
सीली वबरी तिन झीली ल्हीलि खाट
आयो नारद सु ह्यौरद–देखद
नारद ऋषि सु परेसान ह्वेगी
सारदा बम्यौण सु धीर्यौंद बुझौंद
कौंक सारदा तु परेसान होंदी
सारदा बम्यौण स्या बुकारूण रोंदी
मेरा कागज बड़ा बामण दिखावा
बाटा उठि लेगी नारद बरमा का पास
आधा–आधा बाटा तेन बिछौणू बिछैली
रौड़ांदु–दौड़ांदु आयी बरमा का पास
स्वो बड्ड बामण पिठैं माथो देंद
दूद तमोळि सु पो द्यौंद पखळि
क्या आयी नारद तू अन्न नौंकु भूकु
अन्न नौंकु भूकु बस्तर नौंकु टूटु
तब द्यौंद नारद जोग का कागज
बोल मेरा बरमा तु सच–सच बोल
सु बड्ड बामण मुंड ढगड्योंद
नारद ऋषि सु परेसान ह्वेगी
मेरा बामण मैं खौरी ऐगि असंद
बरमा जाँद सु बिधाता का पास
बिधाता बोलदि तुमारा मर्त्यलोक
उछ्याद करिक सि बुरो करदा ब्योवार
दूद तेल खौतिक बुरो करदा ब्योवार
बिसगौण खौतिक बुरो करदा ब्योवार
मर्त्यलोक कि माता बुरो करदि ब्योवार
साळ बैठी ल्यौली त्वेमू नि द्यौली
त्वे खौतण नि द्यौली तु वापस ऐ जाई
माता डांटली तु वापस ऐ जाई
मेरा बचन तु गाँठ बाँधी ल्हीजा
बोला नारद क्या होये बिचार
बड़ा बामणन क्याऊ मैंक बोली
बालक त्वेमू दूद–तेल मांगलू
सो ना द्ये तु वे फटगार
सारदा बम्यौण लेगी पैलो–दूजो मास
सारदा बम्यौण लेगी तीजो–चौथो मास
तीजा–चौथा मास लेगी खट्टा नौंकु भैंद्या
नारद ल्यूँद निमौ–नारंगी
आमों का बग्वान आम तोड़ी ल्यूँद
सारदा बम्यौण लेगी पाँचों–छठो मास
सारदा बम्यौण लेगी फूल नौंकु भौंद्या
नारद जाँद फूलों का बग्वान

नारद ल्यूँद गुलाब का फूल
गुलाब का फूल रैबेली का फूल
सारदा लेगी सु फल नौंकु भौंद्या
नारद जाँद केा का केळा का केळाण
नारद लयूँद केळा का हतरा
सारदा लेगी सातों-आठों मास
दिखेण लगीगे लटग्याळो पैर
सारदा बम्यौण ह्वेग्या नौ-दस मास
सारदा तैं ह्वेग्या सि पूरा दस मास
सारदा तैं लेगी स्या अंग नौं कि पिड़ा
गण्यौंण लगिन सि त् सर्गे कि गैणी
सर्गे कि गैणी काकरे कि बाँसी
बुलौण लगिन सि त् सोडु-वोडु दाई
सारदा कु ह्वेगि सु त् बाळो भगवान
बढ़ाई बजौंदा बाजा-गाजा ऐग्याँ
बुलौण लगिन सि त् औजी नौं को बेटा
औजी नौं को बेटा बढ़ाई बजौंद
बुलौण लगिन सि त् ते बड़ा बामण
सु बड्ड बामण अस्लोक बोलद
अस्लोक बोलद मंगल गांद
तब रे बुलौंदा सि त् सोनली लुवारी
सौमान्या ठकर्वाणी सौमान्या ठकर्वाणी
मैं छौंऊँ ठकर्वाणी बचन को बंदी
मेरो बचन त्वे सरपोळो ह्वेगे
मेरी घुंगूर जोड़ी त्वे जसिली ह्वेगी
त्वे द्यूलू लुवार्यौण मैं डाल्यून त्यवार
डाल्यून त्यवार सुप्यून डड्वार
बढ़ाई बजौंद सु औजी को बेटा
मंगल गांद सु बामण को बेटा
नागोरी मांग स्या सभा हि बैठीग्ये
सभा हि बैठीग्ये मिठाई बाँटीग्ये
सि नागोरी का लोग बधाई रे देंदा
पंचनाम द्यो सि बधाई रे देंदा।

ग्राम-देवशाल वाया-गुप्तकाशी, रुद्रप्रयाग

चैत मैना में द्वफरा मा गयेण वळो चैती नृत्य गीत

दान्युं मा को दानी
स्थाई चरण - इजू ! छायो दान्यूं मांग को दानी
सूरिजा बंशी राजा हरीचंदा जी.....
सहायक चरण - जैका छाया सूना का छतर
छाया वैका चांदी का पतर जी इजू !
छायो दान्यूं मांग को दानी
जैका छाया मोत्यूं का ख्लाण
छाया जैका हीरों का डिसाण जी इजू !
छायो दान्यूं मांग को दानी
जैका पास छई नौऊ निधि
चरणू मो जैकी अष्ट सिद्धि जी इजू !
छायो दान्यूं मांग को दानी
छायो जै को पराणी उमैलो
आज वैको सरैला धुमैलो जी इजू!
छायो दान्यूं मांग को दानी
छायो जै को पराणी उमैलो
आज वैको सरैला धुमैलो जी इजू!
छायो दान्यूं मांग को दानी
बलूरी आज वै की छन फैली
धुंवां ला आँखो वे की मैली जी इजू!
छायो दान्यूं मांग को दानी
विधना की कनी या ठकुरी
राजा लायो ध्यूंरा की चाकरी इजू !
छायो दान्यूं मांग को दानी
दान्युं मा को दानी
इजू ! छायो दान्यूं मांग को दानी
इजू ! छायो दान्यूं मांग को दानी

• केशव अनुरागी

गीत मूल स्त्रोत्र : नाद नंदनी

फ्यूंळि कि गाथा

• प्रस्तुति : नीरू कण्डारी

चैत का मैना डांडी काठियों मा बानि-बानि का फूल खिल्यां रै दिन, बण मा वुंराशी का फूल अर डोखरा पुगड़ों का भीटा पाखों का फ्यूंळि का पिंगला फूल फ्यूंळि का फूल से हमारा जनमानस मा एक कथा जुड़ी चा फ्यूंळि का फूल से एक अमर प्रेम की दुखान्त गाथा जुड़ी चा फ्यूंळि कभी एक ज्यूंदि जागदि नायिका छै, इन बुले जांद कि फ्यूंळि को रूप रंग फ्यूंळि का फूल पर पड़्यू छ।

चैत का मैना चैती गीतु थै लगाण वाळा वेडा, वाददी, अर औजी घौर जैकी चैती गीत लगादन, यूं गीतु मो फ्यूंळि, सरू, सदेई, जस्सी का गीत लगदन।

पाड़ की बेटी ब्वारियों को जीवन बड़ि खैरि को रै। खेती, किसाणी, गाजी वाछी, सुवगर वटै रूमकि तलक काम ही काम घौंर मा सासुक ककड़ाट, जलतेर सोरा भारा, यी खौरि तैं और बढै देंदन। इनमा जब सैरा बण लाल बुरांश का फुलुन लकदक बण्युं हो डांडी मा बानि-बानि का फूल खिल्या हों, मैत की भारी खुद लगदी, ये ही वास्ता चैत का मैना ध्याणियों तै तैत भेजण क रिवाज छ।

बिजी गैन बीजी पयाल वासुकी,
बिजी गैन बिजी खोली का गणेश,
बिजी गैन बिजी द्वतो का थान,
बिजी गैन बिजी दिन को सुरजि,
बिजी गैन बिजी फ्यूंळी स्या रौंतेळि,
रेणी रातु ब्याणी गैण्यो लगि घाम,
तब फ्यूंळि की रौल पूरब का छाजा,
कनि धवाड़ी लगोन्दी.....
लुकारी ब्वारी सूतो जल लैन,
हमारी ब्वारी की अजों निदंरा नि खुलै,
कनकें बिजाळ्लु वीं कि निदंरा.....
मैं झकोली कि बिजाललु त फ्यूंळि छळोयि जाली,

मै अकोलीक बिजाललु त फ्यूंळि तोई सारी जालो,
सतजुग मां सोतो नी बिजाळणु
खांदो नी हितराउणों,
तब रौळ न हाथ धरे शतमुखी शंख,
शंख का शब्द न फ्यूंळि बिजी ग्याये,
चचलैक उठै फ्यूंळि भिभड़े कि बैठि,
ओल्यो पल्यो द्वारा खोलदी घाम लै ग्ये,
पैरे तैन मखमल की जांगी,
लौलेंदी घाघरी सुवापंखी साड़ी घरे कांगी गाडे ऐना,
तब वीणाई खोलदइे फ्यूंळि सौणी सी सुरीज,
स्यूंदी पाटी गाडदी वा धौळि जतो फाट,
तैं का मुख मा सुरीज पीठी मां चंदा,
हाथु मा स्या नि लियेन्दी, भयां स्या नि धरेन्दी,
वीं का रंग मा घुमेलो होन्दो सुरीज,
वीं की मुखड़ी बुरांसी लांदी रीस,
नाकड़ी तड़तड़ी वीं की खड़ी धार सी पौंडी,
ओंठंड़ी दिखंन्दि दाळिय फूल सि वीं कि,
दांतुड़ि दिखेन्दि वीं कि केळा सि गेळ,
तब लै कि पैरीक वा रौंळ का पास जान्दी,
दे दयावा रौळ जी मैं मैंत जाण को हुकुम,
दिन राति को मेरी ब्वारी तेरो कनो मैत होलो,
भात की पाथली तू उबाण नि देन्दी,
डोलेरू की कांद तू स्यळाण नि देन्दी,
गति की कापड़ी मू फैलेण नि देन्दी,
मैत को कलेऊ मू बाटेंण नि देन्दी,
पाणी को नौ नी छ बुंदु मेरी ब्वारी,
जा मेरी ब्वारी तु पैली पाणी को जा,
एक हाथ धरदि फ्यूंळि तांमा की गडुळि,
तब जांदि फ्यूंळि पूरब का ले द्वार,
चला चला दगड्यों बैणियों कुवां पाणि क जौंला,
वल्या–पल्या कोट को एक ही छौ पन्दियारो,
दगड्याण्यू लीकी फ्यूंळि पाणी को पैटी गै,
कुछ अगनै छाई नौनी कुछ छाई पिछनै,
बीच मा दिखेन्दी फ्यूंळि ओंछाड़ जनी,
ढिस्वाळ चलदि त विड्वाळ छ ढळकदी,
लुकारी ब्वारी रजौ..... सरासर गैन,
फ्यूंळि जांदी गुर–गुर..... दां,

हकलकदी–ढळकदी गै वा कुवां का पास,
औंय की ब्वारी पाणी भरीक घौर ऐनी,
फ्यूंळि रौतेली बैठीक छाति खुट्टी धोन्दी,
हाथ खुट्टी ध्वैकी वा कुवा छैल हेरदी,
देखदी वा पाणी मां पड़यूं छैल हैंको,
एक छैल त मेरो होलो, हैंको कैंको होलो,
यो घुंगट्याळो छैल त मेरो होलो,
हैंको फरक्याळो छैल कैको होलो,
इथैं देखदि उथैं देखदि फ्यूंळि रौतेली,
तब ऐंच देखदी भूपति ले रौत,
डाळी मां बैठयूं चौसारो छ गंठ्योणु,
तब मुल मुल हैंसदि चुल बुल बोलांदी,
आज को चौसारों भेना मैई दे देण,
देंण त मैं दयूलू रौतेरी लाली कैंका नौं,
तुम जु देला मै लौंलु बुवाजी का नौं,
जो तेरो बुबाा देलो लाली तेरी बोई,
आज को चौंसरो भेना मैई दे दीण,
देणा मैं दयूलु रौतेली कैका नौं,
तुम जु दियाला मैं लौलु भैजी का नौं,
तेरी भैजी देलो त तेरी बौंजी लाली
तब बोदलो भूपति आज को चौसारो त्वेंक मेरी रौतेली,
पकड़ीक बोली वैन फ्यूंळि भुयां मा बैठाऐ,
सिलंगि कि डाळि निस फ्यूंळि छोपी लगौन्दी,

तब भूपति फ्यूंळि निंदरा ऐ ग्यै,
जन धारू डूबे दिन गाडु पड़े छाया,
तब आये फ्यूंळि पाणि लीक घर बौड़ी
दुरू विटी देखे रौळन वीं को चौसारो,
आज को चौसारो ब्वारी त्वै कैन दिनी,
तब बोलदी फ्यूंळि बाबाजीन दिनी,
तेरो बाबा देन्दो तेरी बई लान्दी,
तेरो भैजी देन्दो त तेरी बौजी लांदी,
ऐलाई बैलाई वीन दस बार दंऊ,
तब बोली वीन भूपति न दिने स्वामी,
सूणि कै हंकार चढ़ी वे पर दूध सी उमाळ
जुता को गारो स्वैणी वड़ो बुरो होन्दो,
मारे लात चोट वैंन, फ्यूंळि उताणि पड़दि,
फूटे कपाळ वीं को नाक डांडि टूटे,
नीला घौ पड़्यां पिगंली मुखड़ी वीं की
फ्यूंळि का पौन उड़ि ग्यां,
चली ग्ये रौतेली देवतौं मा समाई,
तैं कि पिगंळी मुखड़ी को रंग उड़ी कि
फुल्लु मा समाए.....।

• आम्रकुंज बुघाणी रोड श्रीनगर

राजभवन मा फूलदेई

• मनोज इष्टवाल

फूलदेई दुनियां को पैलो यनो परब च जैकि शुरुआत ननतिन करदन अर या प्राकृतिक रूप से ऋतु राज बसन्त कि शुरुआत होंद। ननतिनों को शुरु कर्यू ये पर्व को समापन एक मैना बाद बिखोति का दिन दना-सयाणा करदिन। अर बिखोत बिटि बैशाखा थौळ कौथिग शुरु ह्वे जादन।

चैता मैना संगरदि को फूलदेई का दिन राजभवन मा फूलदेई पर्व मनये गे जैमा महामहिम राजपाल अर मुख्यमंत्रि बि सामिल ह्वेनि। राजभवन मा या कि शुरुआत यूथआईकन का मुखिया शशिभूषण मैठाणी 'पारस' जी कि पिछला सालों बिटि शुरु करीं छ। फूलदेई मनाणौ उंका दगड़ राजधानी का दर्जनो स्कूलों का ननतिन बच्चा फुलकण्डि ल्हेकी राजभवन मा फुल ढोलणौं पौंछदन वेई दिन लगद कि यो राजभवन कै हिमालयी राज को राजभवन छ।

राजभवन मा फूलदेई कि शुरुआत करण वळा मैठाणी जी बोलदन कि यु पर्व हमरी प्रकृति से जुड्यूं पर्व छ अर यु पर्व प्रकृति का दगड़ हमारा समाज का सम्बन्धों कि व्याख्या करद कि हम प्रकृति से कन जुड्यां छौ ये महत्व पूर्ण पर्व राज्य पर्व को दर्जा दिये जाण चयेणों छ। यां से नई पीढ़ी अपणी यीं अनूठी लोक परम्परा से बि जुडलि।

❑❑

ऋतु गीत छन अनुभूति का गीत

गिरीश सुन्दरियाल

जन्म : 9 मई, 1969
कृतियाँ : मौल्यार (गीत संग्रह), अन्वार (कविता संग्रह), असगार अर कब खुललली रात (नाटक संग्रह)
सम्पर्क : ग्राम चुरेड़गांव, पत्रालय जगस्याखाल, बाया चौबट्टाखाल, पौड़ी गढ़वाल

गढ़वाळ का लोकगीतु मा यखै प्रकृति की कतगै अन्वार दिंखेंदन, हमारा मुल्क मा प्रकृति पूजा मानवीकरण अर वेका प्रति आत्मीय भाव वैदिक काल बटि चल्दु आणू छ। प्रकृति अर मनिखि को छपछुपु आत्मीय सम्बन्ध अर दगड्यात् यीं मयळि धरति का कूणा-कुमच्यरौं तक दिखे सकेंद। किलैकि यखऽ मनिखि को जीवन कबि प्रकृति से अलग नि हवे सकदु। ये एक-हैंका बिगरि कबि ज्यूंदा नि रै सकदा, मन यखऽ गीतु मा प्रकृति को वर्णन अफु से अलग नि लग्दु प्रकृति तै यख क्वी भौतिक वस्तु नि मनेगे, बल्कि अपणु अंग अपणि कुटुमदरि मनेगे, यान प्रकृति यख गीतु को वर्ण्न विषय नी, आत्मिक अनुभूति छ। यांका कारण ही द्वियो मा भावात्मक समरूपता, गैरी संवदेना अर परस्पर सापेक्षता दिखेंद। यीं वजै से हमारा लोकजीवन मा कतगै पूजा पद्धति, परम्परा अर रीति-रिवाज इन छन कि जौन ऋतु बार-त्योहारों तैं जलम दे। जो प्रकृति का प्रति पूजा, प्रेम अर आत्मीय भाव व्यक्त करदन। हमारा लोक मा धरति पर उफरण वळि हर कुटमुणी, कुंम्पळि अर फूल को एक त्योहार को उल्लास देंद, येसै हमारो समाज मात्र एक सामान्य जैविक क्रिया नि मानदो, बल्कि एक पर्व का रूप मा मनौद, जो कि प्रकृति का दगड़ी वेका आत्मीय सम्बन्ध तैं दर्शांद।

हमारी धरती मा ऋतुगीतू की परम्परा भौत पुरणि छ, यख तक प्राचीन संस्कृत काव्यों मा बि ऋतुगीतू बिंजा छन जो कि लोकगीतु से प्रेरित मने जांदन। ऋतुगीतु का बीज लोक की धरती मा हि औंकरदिन गढ़वाळ मा सर्वाधिक प्रचलित लोकप्रिय गीत बसन्ती (चैती) ह्यूंद्या, अर चौमासा छन् किलैकि ये ऋतु मुख्य रूप से प्रकृति अर लोक का उल्लास से जुड़ी छन।

यूं मा बि बसन्त ऋतु सबसे ज्यादा महत्व रखद, गढ़वाळ मा बसन्त ऋतु मा जो गीत गये जांदन वूंमा बसन्ती, चैती, खुदेड़ अर झुमेलो विभिन्न रूपों मा व्यक्त होंदन। बसन्ती सामान्य रूप से बसन्त की शोभा का गीत

छन। प्रकृति मा डाळि-बोट्यों को हैरू-भैरू होणू फुलार बैठणू भौंरा-प्वतळौं को रिंगणू मनिखि का जीवन की अपणि अनुभूति खिलदा फुलार अर हैसंदा मौल्यार तै नया रूप रंग मा द्यखद, यूं गीतु मा बसन्त ऋतु को बौड़णौ मौळ्यारौ आणौ अर बनि-बनि का फूलों को खिच हैसणू, मुलमुल हैसणू भौरां-प्वतळौ तै रंगस्याणू उलार्यों तै उळ्याणों खुद्याणौ को जिक्र मुख्य रूप से दिखेंद। यूं गीतू मा जौं फूलों को विशेष वर्णन छ वूं मा पय्यां, रैमासी, लय्यां, मेळू, ब्रहम कमल, लसर, जयाण, कमळ्या, सितराज, दळ्म्या, आदि उल्लेखनीय छन्, पर यूं मा बि फ्यूंळि अर बुरांस सबसे अधिक लोकप्रिय छन् वो यखै प्रकृति अर वेकी सुन्दरता को प्रतिनिधित्व करदन।

फूल फूलेन अनमनि भांति मा
बॉज-बुरॉस की कोंपळि मौळी
सुमाया सेलपाड़ो कॅूजों फूले
बण की सबि लगूलि फूले
फूल-फूलु मा म्वारी रूणाली
हिलांस प्यारी डॉडौ मा आली
कखि घुघुति घुरद प्यारी
जिकुड़ी मेरि झुरांद प्यारी।

इन हमारा लोक मा हजारों गीत छन् जौमा यखै प्रकृति अर वींका दगड़ि गैरी अनुभूति अर संवेदना दिखेंद। फूल यी ऋतु मा उद्दीपन को काम करदिन उन्नि यखऽ पौन-पंछी कफू-हिलाँस मेल्वड़ि, घुघुति आदि की मयळि भौण खुदेदी पराण्यूं तैं मैतैं खुद लगौंदि अर स्वामी की याद दिलौंदी। ये हमारा सबसे बड़ा रैबार्या बि छन। हमारा खुदेड़ गीतु मा यूकू कळकुळो वर्णन मिलद। कुल मिलै कि यखै डाळि-बौट्यी, लगुलि-पतुळि, फुल-पाती अर पौन-पंछी सब मिलै कि जै मौळ्यारै ऋतु कि शृष्टि करदन वो खुदेंदि जिकुड़ि तै हौर खुद लगांद। या खुद जिकुड्यों मा कांडु सि बिनांद पर फिर बि यीं पिड़ा मा भले ही उदासी पर बैर-भौ कतै नि होंदु। य हमारा पहाड़ी चरित्र की विशेषता बि छ।

हमारा घर गौं मा बसन्त पंचमी, फूल संगरांद (चैते सगरांद) विशेष प्रिय छन्, किलैकि यूं का औंदा हि बसन्त को आगमन हवे जांद, अर जगा-जगौ धार्मिक पर्व-त्योहार वीरेण लगि जांदन्, बसन्त ऋतु मा कखि मैना भर कखि हप्ताभर कखि मेष सक्रान्ति अर्थात बिखोत तक फूलदेई त्योहार मनयें जांद। यानें चैतै संगरांद से लेकी बैसाखै संगराद तक गौ की छ्वटि-छ्वटि नौनी बनि-बनि फूल लैकी सबि मौ कि देळ्यूं मा धरिदिन अर तौंकि सुख-समृद्धि की कामना का गीत गादन—

फूलदेई छमा देई दैणी द्वार भर भकार
फूलदेई फूल संगरांद
सुफल करो नौ बरस तुमकू
भगवान तुमारा भर्यान भकार
अन्न-धन फल्यान
चौदिशु फूल खिल्यान
दैणी हुया फूल संगरांद।

बसन्त ऋतु मा डांडा-कांठौ थड़िया-चौफला, झुमेलो आदि लोकनृत्य गीतून गुंजणा रदन्, यू गीतू मा बिं अनुभूति की हि अभिव्यक्ति प्रमुख छ। मिलन अर विछोह आशा-निराशा प्रकृति वर्णन अर रुद-खुद यू गीतु मा द्यखणौ अर सुण्नौ मिल्द, ये गीत पारिवारिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति बि करदन, जै तैं ससुरस्य बेटी व्यक्त करदन्।

आयी बार बसन्त मैनो आयो चैत को
मनखि त रया दुरु पंछि नि आयो मैत को
आयो मैना बैसाग की सुख नी छ सास
ग्यूं-जौ का पूळौं निस, कमार पड़िगे झास
हिंसार को गूंदो मांजी, हिंसर को गूंदो
परदेशी मुलुक मांजी क्वी अपणो नी हूंदों।

❑❑

सदेई

• तारादत्त गैरोला

सदेई चैती गायन परम्परा को अमर गीत छ यो गीत साख्यूं बिटि औजि चैती अर चैती पसारा मा गाणा रैनी अर वूकै मुख बिटि सूणी पंडित तारादत्त गैरोला जीन यो कथा गीत संकलित करि ये गीत सदेई कि भूमिका मा वूंको लिख्यू कि—ये गीत हमारा देश का औजी चैत का मैना मा जब वो अपणी दिसाओं का घर मांगण जांदन तब गांदन। मैन बि यो कई बार सुणे। पूरो गीत भौत कम औजि जाणदन बहुत कुछ अपभ्रंस करी गांदन। मैन जनो सुणि छयौ वे मा बहुत कुछ परिर्वतन करण पड़े।

कवि शिरोमणी पंडित तारादत्त गौरोला जी को संकलित कैरी लिख्यूं यो कथा गीत इतिहार कार शिवप्रसाद डबराल 'चारण' जी का सम्पादन मा **सदेई : जाग्रत स्वप्न** पुस्तक बिटि पूरो गीत ये चैती अंक मा धाद का पढदरौं का वास्ता *साभार : सम्पादक।*

(1)

सदेई की छे जनि मैत डाळी,
बिस्रौण कू तै खुद तैं न तन्ने।
सिलंग डाळी ससुराड़ि लाई,
चमोला[1] की सुन्दर चौंरि मांजे!! 1!!

दुपत्ति होई, चउपत्ति होई,
हाथू कि बेतू कि त डाळि ह्वगे।
औरू कि वर्षू बढ़देन जन्नी,
सैदी कि डाळी बढ़दे दिनू मां!! 2!!

गईन फाटी अब चार सांई,
चारौं दिशौं मां त गयेन फैली।
फांगे व पत्ते भि त खूब घऽणी,
आयेन सांयो पर डाळि वीं की!! 3!!

गुटमुट बड़ी छत्रि सि गोळ डाळी,
छाया घणी स्या भलि देण लैगे।
चौंरी घस्यार्यों कि बिसौण होली,
तैं डाळि मां होलो चड़ों को बासो!! 4!!

क्या खूब स्वाणी कनि डाळि प्यारी,
तैं चौंरि मांजे कनि देंद शोभा।
दोफ्री का घामऽत थक्यां बटोई,
निस डाळि बैठी देला आसीस!! 5!!

(2)

जाड़ो नसीगे प्रकृती बिजीगे,
पशू व पंछी सभि जी गयेन।
जाड़ा न जो सुन्न त होइ गैतो,
स्यो बौड़िगे ल्वै-रस-सार प्राण!! 1!!

डाळी व बोटी बण वो बणोंडी,
निर्लज्ज जाड़ा न करेति नांगी।
अनेक पैर्यालन ऊं न रंग की,
बसंत का स्वागत कू त साड़ी!! 2!!

गाड ऽ गधेरा अर पंछि पौन,
छया जो जाड़ा न सुन्न होयां।
कर्ण ऽ से कोलाहल लागि गैन,
खुशी बसन्त ऽ कि मनौण लैन।। 3।।

चीरो कळेजा पहुचौण्या वायू,
स्या धैंत स्वाणी अब लागदे छ।
सुगन्ध फूलू दगड़े मिली क,
अमृत पिलाई पुलकौंद पौन।। 4।।

सफेद रत्ता पिंगला व नीला,
भांती व भांती छन फूल फूल्यां।
सभी न यूँ न ऽ प्रकृति पुरूष की,
सजाइ दीने रति-रंग-भूमी।। 5।।

कुलूड़ी भि फूली अर फ्यूंळि फूली,
गयेन फूली बण वो बणोंडी।
गुलाब फूल्यो अर कूँजो फूल्यो,
फूली गयेन लगुले व झाड़ी।। 6।।

आरू घिंघारू अर आम डाके,
निम्बू नरंगी भि त फूलि गैन।
चम्पा भि जाई भि चमेलि फूली,
बुरांस धारू मंज ऊंचि फूल्यो।। 7।।

सिलंग फूली सब तौर फूली,
गईन फूटी कलि कोंपले भी।
क्या घऽर क्या बऽण सभी जगौं मां,
सिलंग की बास सुबास फैली।। 8।।

छन रंग नाना, अर रूप नाना,
सुबास नाना अर गीत नाना।
अनेक नाना विधि का त स्ये तऽ,
दिखेंद, सूँघेंद, सुणेंद, जां तां।। 9।।

गीतू सुरीला छन पंछि गाणा,
वी कोकिला की पर प्यारी कू कू।
सुणेंद चारू दिशि दूरू दूरू,
दुखौंद ज्यू कू सहदेइ का छ।। 10।।

पंछी त गाला छइ मास और,
चेड़ो कफू बासलो चैत मास।
सिलंग डाली पर फ्यूंळि गाली,
ना बास के कू जिकुड़ी झुरौंदी।। 11।।

हल्या रयों मां छन मस्त रौंक्णा,
पाख्यों घस्यारे छन गीत गाणी।
लगाइ भौणे छन गीतु मांजे,
सवालू जबाबू दुहरौण लागीं।। 12।।

रै वार रै पार हिलांस प्यारी,
कू कू करी कूकद लंबि कू कू।
झपन्याळि गैरी छ गदेऽरियों मां,
स्या म्योलड़ी भी कना गीत गाणी।। 13।।

भौंरा छया जो सुनसान ब्याके,
स्ये आज फूलू फुलु मांत गुंज्णा।
ये फूल की केशर फूल वै मां,
लिजाण लाग्यां छन स्वार्थि भौंरा।। 14।।

इनी निराली अर भांति भांत्यूँ,
छ काम होणू प्रकृति-पुरूष को।
सृष्टी छ सारी उत्सौ मनौणी,
खुशी मनौणी खिल खिल हंसणी।। 15।।

बसन्त ये मां रज-तात-बात,
आयूँ छ गर्भाशय बीजु माँजे।
जण्न ऽ कु जन्तू जननी जनक को,
छ जज्ञ जोड़यूँ जग मांज जा तां।। 16।।

सिलंग नीस ऽ सहदेइ बैठीं,
सुण्णी छ देख्णी छ बण की बहार।
तैं मैति डाळी मुँ सदानि औंदे,
खुदेड़ सैदी खुद बीसरौण।। 17।।

सैदी कु औंदे जब याद मैते,
दगड़ू याणियों की भि छ याद औंद।
बणूँ बणोंडो कि भि याद औंद,
धारू व गाडू कि भि याद औंद।। 18।।

चौंरी मां बैठीं च खुदेड़ सैदी,
बौळी सि होई खुद ते सदेई।
रोंदो बरांदो गये पास मां का,
चिड़ी सि रीटी भरि ज्यू स्या रौंदे,
इना इना बैन मुबैन बौदे।। 19।।

''हे ऊँचि डांड्यों तुम नीसि जावा,
घणी कुलायों तुम छांटि होवा।
मै कू लगीं छ खुद मैतुड़ा की,
बाबा जि को देखण देश देवा।। 20।।

मैत ऽ कि मेरी तु त पौन प्यारि,
सुणौ तु रैबार त मां को मेरी।
गाडू गदऽन्यू व हिलांस कप्फू,
मैत ऽ को मेरा तुम गीत गावा।। 21।।

बार ऽ ऋतू बौड़लि बार मास,
आली व जाली जनु दांइ फेरो।
आई नि आई निरभाग मैं कू,
क्वी भी नि आई ऋतु मेरि दां त।। 22।।

मैत्यों कि भेजी कपड़ों गीत गाली,
गला लगाली खुद बीसराली।। 23।।

मैत्यों कि भेजीं कपड़ों की छाल,
पैर्ली दिखाली कनु से मिजाज।
लठ्याळि मेरो कुइ भाइ होंदो,
कलेऊ लौंदो व दुरौंदो पैणा।। 24।।

लठ्याळि होलो निरभाग मेरो,
पीठि नि क्वी होयन भाइ बैणा।
करी पिछिण्डी छऊं धौली पार,
गाऊँ विदेशी अर दूर देश।। 25।।

जवान ह्वैग्यूँ लड़क्वालि भी ग्यूँ,
मेरी करे कै न खबर न सार।
मैत ऽ कि देवी छइ झालीमाली,
मेरी सुणीयाल बिपत्ति भारी।। 26।।

दीयाल मैं कू इक भाइ प्यारों,
देखी क जै कू खुद बीसरौं मैं।
भाई कि मुखड़ी जब देखि लौंदो,
होंदो सुफल जीवन यो त मेरो।। 27।।

मैं कू त नी छ कुछ और इच्छा,
समान भाई नि छ और क्वी भी।
देली तु जो यो बर आज मैं कू,
मैं देंउलो त्वै सरवस्व देवी।। 28।।

जो भाइ होलो अठवाड़ द्यूँलो,
पंडौं नचौंलो अर जात द्यूँलो।
खोंदू अभी नीतर प्राण अप्णो,
सहाय ह्वैजा दुरगा भवानी''।। 29।।

देवी भवानी, जननी जगत की,
प्रसत्र होंदे बर तैं कु देंदे।
''होलो सदेऊ इक भाइ तेरो,
बड़ो प्रतापी मिललो वो त्वै कू''।। 30।।

अकाशवाणी इनि वीं न सूणे,
''सुप्नो छ यो या भरमौणू क्वी मैं?
या मेरी होली कुल इष्ट देवी'',
दन्दोळ नाना बिधि कर्दि मन्मा।। 31।।

गई सदेइ जब सांझ होये,
सिलंग डाली़ सणि भेंटि डेरा,
धर्दी छ वा धीरज, शान्त होंदी,
लग्दी छ धन्दौं पर स्यात घर्का।। 32।।

(3)

जन्मी गये मैत सदी को भाई,
होई खुशी गे अति मैत वीं का।
माता सदी की उत्छौ मनौंदे,
पंडौं नचौंदे अठवाड़ कर्दे।। 1।।

लगौंदन ऽ मांगल़ गौं कि नौंने,
वो वेद वर्मा कुँडली लगौंद।
''होलो प्रतापी यो पुत्र तेरो''
सदेउ वैको छ वो नाम धर्द।। 2।।

वर्षू जना औरु का नौना बढ़ला,
सदेउ बढ़लो दिनु मासु मांझ।
बार ऽ बरष को जब सैदु होयो,
शेरू व मिर्गू सणि मारि लौंद।। 3।।

वो खेल नाना विधि का छ कर्द,
पंडौं का नाच ऽ व अंग्वाळे कर्द।
लौंदो छ जीता स्यो बाघु बाँधी,
होलो बड़ो वीर त बाल़ो सैदू।। 4।।

औंदन औरू कि त बैणे मैत,
भेटेलि बैणे दीदा भुलौं से।
कलेउ लाली अर बांटली भी,
सैदू का नी न कुइ भाइ बैणा।। 5।।

देखी क तौंकू त उदास होंद,
सदेउ वीर ऽ इना बैन बोद।
''बैणी जो होंदी त कलेउ लौंदी,
मैतूड़ा औन्दी जनि और ऐने।। 6।।

भाग्यान होला छन जौं कि बैणी,
निर्भाग छौं मैं नि छ जै कि बैण।
किलाइ माता नि छ बैण मेरी?''
सुणी क माता जिउ रोकि बोदे।। 7।।

''मेरा सदेऊ तु भकाइ कै न?
क्या कर्दि बैणी कि त बात पूछी?
होंदी जो बैण ऽ त स्या मैत औंदी,
नादान छै तू त बुबा सदेऊ''।। 8।।

स्वप्नो इनो रात सदेउ होंद,
सिलंग डाली़ इक द्यौलि़ पार।
सुगन्ध स्वाणी घणि गुटमुटी सी,
बैठीं छ डाळी निस एक नौनी।। 9।।

सदेउ का गांव जथैं च देख्णी,
अती खुदेणी छ, छ और रोणी।
नौना त बैठ्यां दुइ पास तैं का,
अंद्वार तौं की भि छ सैदु की सी।। 10।।

सैदू बिजोगे अर देख्ण लैगे,
इथैं उथैं खोजण बैण अप्णी।
''स्या बैण मेरी त अवश्य होली,
बिजी किलाई, हत ! नींद मेरी?।। 11।।

कनाइ जौंलो गउं बैणी का मैं?
मैं मैत बैणी कु कनाइ लौंलो?''
बौळौ सि ह्वै क इन बैन बोद।। 12।।

''बैणी को गाऊं बतलौ तु माता,
जाई क बैणी कु त मैत लौलो।
देखी छ मै न ऽ सुपिना मां रात ऽ,
रोणी बराणी अर कोसणी छ।। 13।।

माता दिदी मेरि अवश्य स्या छ,
बतौ तु कर्लो नित अन्न सन्न।
फाँसी लगौलो विष खाइ मर्लो,
बैणी की मैं खोज अवश्य जौंलो''।। 14।।

सदेइ की याद त मां कु औंदे,
उम्ड़ी गये मोह ममत्व वीं को।
''छै कोखि पैली जनमी सदेई,
बड़ी ख ऽ री खाइक लाड़ि पाल़ी।। 15।।

कठिण् छ बाटो वख दूर देश,
डांडा व कांठा त अकाश पौंछ्यां।
भंगार डांडा छन भारि भारी,
बाटो न पैंडा नि छ बस्ति क्वी भी।। 16।।

छाला गधेरा पहुंच्या पताळ,
गैरी छ गंगा अर गाड गद्रा।
कठैतु का गाउं चुला कठूड़,
बिवैति जब से कनि स्या छ क्या छ?।। 17।।

प्यारी सदेई नि बुलाई मैत,
बर्ची च वा या मरिगे नि सूणी।
खबर नि सार ऽ वख दूर देश।
सांसो नि कर्दो वख जाण को क्वी।। 18।।

वियोग प्यारी सहदेइ को त,
कठोर छाती करि सारे मैं न।
बड़ी ख ऽ री खाइ क पुत्र पैतो,
हा दैब ! यो भी अब तू नि रखदो।। 19।।

सदेउ मेरा छइ तू अदान,
कनाइ जैलो तख धौळि पार?
झाड़े बणाई घन घोर घ ऽ णे,
स्यू बाघ भालू छन जां डुकर्ना।। 20।।

वे दूर को त्वे रसता बतालौ?
कू भालु बाघु सिउ से बचालो?
त्वै भूक मेरा लगली सदेऊ,
हे बाबु, खाणो तख त्वै को देलो?''।। 21।।

बिलाप कर्दे धड़कें द छाती,
औंदे जिऊ मां तब सोच तै का।
''होलो सदेऊ भड़ वीर भारी,
हे झालिमाली करि तै कि रक्षा''।। 22।।

''आंखी त माता रसता बताली,
जांघा तराली नदि और नाळा।
भुजा ये मेरी सिउ बाघ मार्ली,
देवी बचाली मईं झालि माली।। 23।।

पकैदे माता तु कलेउ मैं कू,
ब ऽ रो धरीदे तु त बोइ मैं कू।
माता तु बैणी कु पकैदे मेरी,
स्वाळा पकोड़ा अर रोट आर्सा।। 24।।

बणों तु माता बहिणी कु मेरी,
टाल्खी व आंग्ड़ी अर घाघरी भी।
बैणी कु द्यूलो अपणी त मैत्या,
कलेउ कंडी कपड़ो कि छाल''।। 25।।

सैदू न पैर्यो भड़वालि जामो,
बांधी कमर मां तलवार अप्णी।
धर्याले तै न अलगोजा मोछंग्,
देखेंद सैदू रण बांकुरो सी।। 26।।

बांसूळि मोछंग् त बजौंद सैदू,
देखेंद सैदू कनो बांको खस्या।
देखी भलो स्यो रंग रूप अप्णो,
नाच्यो सदेउ जनु मोर बण् मां।। 27।।

टेकी क माथौ चरणु मां मां का,
ध्याई हृदै मां कुल इष्टदेवी।
वै राइ काला बिटि सैदु पैट्यो,
मनौण मां भी लगे झालिमाली।। 28।।

(4)

साम्णे छ वेका घनघोर बऽण,
लग्ले व झाड़ि घनघोर घऽणी।
घऽणी अन्धेरी छन बीच जौं का,
सुई छिरक्दी नि छिरकदो घाम।। 1।।

सैदू को सांसो अर इष्ट वेको,
बतौंद पैंडो व लिजांद वै कू।
तै कू तरौं ऽ द नदि और लाला,
डांडा व कांठा भि लंघौद वै कू।। 2।।

पौछीगें सैदू घन घोर बऽण,
घुर्णा छया स्यू जख बाघ भालू।
किर्णऽसूरज् की जख नी छिरक्दी,
नी देंदि बाटो लगुले व झाड़े।। 3।।

तौं भालु शेरू कु भगै क मारी,
झाड्यों लगूल्यों बिच छिर्कि छार्की।
बढ्यो अगाड़ी रसता लगै की,
गंगाड़ पौछयो सहदेउ भऽड़।। 4।।

क्या खूब रै छ दुइ धारू बीच,
हर्यां भर्यां खेतु न देणि शोभा।
क्या फूल फूल्यां छन भांति भांति,
सुगन्ध जौं की अति दूर फैली।। 5।।

भौंरा भि गुँज्णां छन फूलु फूलु,
पंछी त बास्णा जख डाळि डाळ्यों।
हळ्या रयों मां छन गीत गाणां,
पूजा छ होणी तख मन्दिरू मां।। 6।।

राजा व राणी महली मुसद्दी,
विशाल कोठ्यों व कचेरियों मां।
हाथी व घोड़ा पल्टन रिसाला,
तख दौड़णा छन परेट कर्ना।। 7।।

जोगी व जंगम छन वेष धारी,
होला तहां बामण वेद-पाठी।
चोरो उचक्का छन गांठ-कट्टा,
होंदान फूलू बिच ज्यों कि कांटा।। 8।।

बागो बगीचा बगवान भारी,
फूलू फलू ते छन जक्क होयां।
बाजार चौपड़ को छ दूर फैल्यूँ,
व्यौपार नाना विध जां छ होणू।। 9।।

गंगा जि का तीर सदेउ जांद,
देखी क शोभा परसन्न हांद।
गंगा की धारा कनि छ ऽ दिखेंदे,
हरी रई मां जनु नीलो गोट्टा।। 10।।

बैठ्यां मठों मां छन तीर तैंका,
साधु व जोगी हरि नाम जपणां।
संसार की ऊ सब मोह माया,
त्यागी क लौ ईश्वर मां लगौणां।। 11।।

गंगा कि धारा कनि वा पवित्र,
साधू जनू कू कनि शान्ति दें दे।
दें दे सबू कू कनि भुक्ति मुक्ति,
तरोंद संसार समुद्र से भी।। 12।।

सैदू का मन मां तब भक्ति होंदे,
लीला इनी देखि क जाह्नवी की।
द्वी हाथ जोड़ी क खड़ो उ होंद,
स्तुती इनी भागिरथी कि कर्द।। 13।।

''तुम्हारी धारा स्या कनि छ जननी हे अति भली,
जई का दर्शन ते मिटदन हमारा दु:ख सभी।
मुनी वो महात्मा भजदन सदाने तुम सणी,
कनी तू हे गंगे, हरदि तऊं का ताप सब ही।। 14।।

तुमी कू हे माता, तप करि क लैतो स्वरग ते,
भगीर ऽ थ ऽ राजा पितर अपणा तारण कु थैं।
छुटी धारा तेरी शिव जि कि जटा ते निरमल,
पहाड़ू पाहाड़ू बिच धसि क आई रथ पिछै।। 15।।

दिनेती मू घूटी चलदि पथ मां जह्नु ऋषि न,
पती नागू को त्वै यमपुरि कु ली बासुकि गये।
महा भारी भक्ती नृप न तबी तेरि करि छई,
प्रसन्न तुष्टा ह्वै तब दरश दीन्यो भगत कू।। 16।।

पहुंचाया सीधा तब पितर वे का स्वरग कू,
छई देंदी गंगे पतितु कु मुगती पाप हरणी।
छ मैमा तेरी भी अनुपम बड़ी ख्यात जग मां,
रंदी मू हे गंगे नित हि शिर माथे शिवजि का।। 17।।

लगैदे मां मेरी डुबदि नौका पार जलदी,
छऊं तेरा शर्णागत अधम पापी अति बुरो।
तु दे माता तारी विपद-दुख-रूपी भंवर से,
मिलाई दे मैं कू सदेइ दिदि मेरी भगवती''।। 18।।

होई गे माता वइ ते प्रसन्न,
दीयाले वे कू तब दर्श अपणो।
तरौंदि वै कू तब पार गंगा,
गंगा तरी स्यो बड़लो अगाड़ी।। 19।।

डांडो लगी गे अब एक भारी,
''डांडा कि ये मी चढ़लो चुळंखी।
क्या छ ऽ कनू छ ऽ यइ डांडा पार,''
बोल्यो लग्यो वो चढ़ण ऽ उकाळ।। 20।।

सदेउ पौंछीगे चुळंखि मांझ,
आइ गयो स्यो त पँवाळि कांठा।
बैठी क सैदू इक डाळि नीस ऽ,
शोभा लगी गे तख की त देख्ण।। 21।।

छ येक मैदान त दूर फैल्यूँ,
बुग्याळ बोदा छन लोग जै कू।
अनेक रंग् का तख फूल फूल्यां,
सुगन्ध जौं की भि छ दूर फैली।। 22।

जड़ी व बूटी छन भांति भांति,
पशु व पंछी छन भौत रंग का।
कस्तूरिया, थार, बरड़, मुनाल,
निर्द्वन्द होला से तहां विचर्ण।। 23।।

फूलू व पत्यों न रंग रंग की,
सर्जी छ मैफिल प्रकृति-पुरुष की।
पालो व धारा छन जो जम्यां तां,
छन जग्मगाणा किण्यों सुरज की।। 24।।

नीला चंदोया न ढ़कीं छ मैफिल्,
खम्बा फटिक् का छन स्वर्ग पौछ्यां।
चद्दर बिछांई छन रंग रंग् की,
फूलू व पत्यों कि त दैवि तै मां।। 25।।

गंगा कि धारा अर पंछि पौन,
अद्भुत सुरीला छन गीता गाणा।
आकाश से होणि छ पुष्प वृष्टी,
गन्धर्व वो देव छन नाच कर्ण।। 26।।

साम्णे छ वां का थुपड़ो सपेद,
वर्षू को अस्सी जनु होलो बुड्या।
शिर से छ फूल्यूँ अर पैर तक स्यो,
सपेद चिट्टी छ जटा लटक्णी।। 27।।

गंगा कि धारा छ जटा मां नीली,
सुपेद साफा जनु नीलो गोट्टा।
नन्दा छ बैठीं जंघा मां तैका,
देखैणि लीला शिव कू रिझौणी।। 28।।

त्रिशूल डौंरू छन हाथ शिव् का,
गल़ा मां वे का छन रूंडमाला।
छन तीन आँखा अर चन्द्र माथा,
भुजंग लिपट्यां छन चारू ओर।। 29।।

ब्राह्मा व विष्णू अर यक्ष किन्नर,
स्तुती सभी से शिव की त कर्ना।
सदेउ देखी क अनूप दृश्य,
भैतीय होंद ऽ अर कांपदो छ।। 30।।

आंखा बुजीक क दुई हाथ जोड़ी,
''जय हो तुम्हारी, जय त्राहि त्राहि!''
डरी मरी क अर माथो टेकि,
आगे बढ़् यो फेर सदैऊ वी।। 31।।

अनेक डांडा अर कांठा ह्वै क,
महा भयानक गदरा टपी का।
बण् वो बणोंडा लंघि भारि भारी,
भालू व बाघू कु मारी भगै क।। 32।।

(5)

चूला-कठूड़ ऽ तब सैदु पौछ्यो,
चौंरी चमोला कु त जाइ लाग्यो।
बैठी गयो स्यो तइं चौंरि मांजे,
दीदी को गांऊं अर देख्ण लैगे।। 1।।

''औ भैर मेरी बउ! तू सदेई,
चौंरी चमोला मां हपार देख।
चौंरि मां देख ऽ तु भाइ अप्णो,
तेरी जनी सूरत मूर्त वै की''।। 2।।

सूणी सदेई तब रोण लैगे,
''किलै तु ननदी! जिकुड़ी झुरौंदी?''
भाई को सूणी क त नाऊं सैदी,
बौलि़ सि होइ भरि नैन रोंदरे।। 3।।

तसी सदेई डिठ मोड़ि देंदे,
देखेंद वी को हि सि स्यो च भाई।
देखी क होई तब स्या प्रसन्न,
कर्दी छ सुमरण निज इष्ट को भी।। 4।।

बिछौंद बाटा दरि वो गलीचा,
लीगीगे आदर कु दमांउ ढ़ोल।
दीदी का डेरा सहदेउ आये,
सैदी लगे भेंटण भाई अप्णो।। 5।।

दण म ऽ ण रौंदे अर भुक्कि लेंदे,
परीक्रमा भी सहदू कि कर्दे।
कर्दी छ स्या आरति पांव धोई,
पिठाई माथा पर स्या लगौंदे।। 6।।

बैठौंदि पांख्ड़ी पकड़ी पलंग मां,
माता कि धै मैत कि बात पुछ्दी।
सदेउ भी मैत कि बात लांद,
सुणी क दीदी प्ररसन्न होंदे।। 7।।

''दीदी तु ऐती सुपिना मां मेरा,
प्रत्यक्ष देखू तब चाह होये।
उठैन भारी दिदि कष्ट मैं ना,
ह्वै लालसा आज छ पूरी मेरी।। 8।।

नी रै छ इच्छा अब क्वी भि मेरी,
ह्वैगेन दर्शन अब दीदी तेरा।
लाईं छत्वै कू दिदि आंग्ड़ि टाल्खी,
दिनीं छ मां की, खुद यां ते बिस्रौ''।। 9।।

देखी क सैदू होंदि गद् गद्,
मैत ऽ कि वै से सुणि बात रीत।
बुलौंदि सैदी उम्रा व सुम्रा,
नौनौं कु अप्णा सणि भेंट्ण मामा।। 10।।

पंडौ नचौंदे अठवाड़ कर्दे,
देवी भवानी को भि जज्ञ ठर्दे।
बागी व बाखरा कुकड़ो भुजेलो,
कर्दी च स्या अष्टबली इकट्ठा।। 11।।

''चैंदी छ सैदी नर की बली मैं,
तुस्दो नि मैं बागि व बाखरों ते।
द्वी पुत्र तेरा छन उम्रा सुम्रा,
ऊं की बली दे तब मान लो मैं।। 12।।

या सैदु भाई भड़ जो छ तेरो,
वे की बली दे रख तू प्रतिज्ञ।''
आकाश-बाणी इनि वीं न सूणी,
सैदी कु बाणी सुणि औंद मुर्छा।। 13।।

सदेई कू तै जब होश औंदे,
विलाप कर्दे तब स्या इनो छ।
''हा देव! आई कनि या विपत्ति,
लठ्याल़ि मेरो कनु भाग फूट्यो।। 14।।

भाई चढ़ौदूँ त च गीत हत्या,
होंदी सुतू से अर कोख सूनी।
धिक्कार मैं कू, जनम ऽ कु मेरा,
कभी भी होयो सुख नी छ मैं कू।। 15।।

बोले तभी यो छ महा जनू न,
कभी भि कै कू सुख नी छ जग् मां।
वस्तू सभी जो सुख की गणेंदी,
दुख देण वाली छन से सभी ही।। 16।।

संसार स्वप्नो इनु मैं न सूणे।
स्वप्नो बड़ो स्यो दुखदाई होलो।
ज्यू ण ऽ कि इच्छा अब नी छ मैं कू,
मरी क होला सब दु:ख दूर।। 17।।

बैकुंठ जौंलो मरि जो मि जौंलो,
पुत्रू व भाई अप्णों का साम्णे।
चढ़ौंदु माता, अपणी बली मैं,
प्रसन्न ह्वै जा अर तुष्ट ह्वै जा।। 18।।

''नारी नि चढ़दि बलि जज्ञ मोझे,
निषेध यां को भि छ शास्त्रु मांझ।
बली त चैंदी नर की सदेई,
झट पट् चढौ तू व निभौ प्रतिज्ञ।। 19।।

राजा हरिश्चन्द्र दधीचि आदी,
होया अनेकों जग वीर दानी।
सीता सवित्री छन वीर कन्या,
छ सत्त जौं को जग मां प्रसिद्ध।। 20।।

शरीर मन छ ऽ सुख दु:ख को हेतु,
नी छ ऽ मू ये, छइ मू अम ऽ र।
न शस्त्र त्वै कु छन छेदि सकदा,
न अग्नि त्वै कू सकदे जलाई।। 21।।

न आंधि त्वै कू सकदे उड़ाई,
न वूष्टि त्वै कू सकदे गलाई
न मार्दो क्वी कै न बचौंदा क्वी कै,
छ योग माया सब कर्म कर्णीं।। 22।।

तू राजकनया छइ व्रत्त धारी,
स्व धर्म रक्षा हि छ कृत्य तेरो।
यो सार गीता उपनीषदू को,
यो ही भर्यूं छ उपदेश तौ मां''।। 23।।

साक्षात् देवी मुख से सुणी क,
आदेश यो वीं तब ज्ञान होयो।
कर्याले तै न स्थिर चित्त अप्णो,
कर्याले तैं न स्थिर चित्त अप्णो,
घर्याले ध्यान ऽ निज इष्ट को भी।। 24।।

''आतिथ्य पूजा छ त धर्म श्रेष्ठ,
महत्व भाइ को भि होंद भारी।
मैं द्यूलो माता निज पुत्र त्वै कू,
सन्तुष्ट हो तू जननी जगत की''।। 25।।

करी दिने पत्थर को कलेजो,
नौंनो कु कोठा पर लीगे स्या त।
तौं का लगीगे कपड़ा उतार्न,
हाथू कि धाग्ली व गला कि हंस्ली।। 26।।

''किलै तु मां गाड़दि धाग्लि हमारी?
मांगा बणौंदी तु किलाइ माता?''
''बेटों तुमारो यख आयुँ मांमा,
तूमू नया स्यो पहिरालो कपड़ा''।। 27।।

ली हाथ याले तलवार खांडो,
''तलवार तू गाडदि मां किलाई?''
दिनेन काटी शिर तै न तौं का,
लि आए तौं का धड़ जज्ञ मांझे।। 28।।

लुकाइ दीनेन त शिर व गौणे,
बिसरौण कू तैं खुद तैं न अप्णी।
''सफल नि होंदो सहदेइ जज्ञ,
बिना चढायां शिर पैरू का भी''।। 29।।

सुणी क सैदी कुछ बोलदे नी,
मन मां हि रौंदे अर भित्र जांदे।
मुँडली व गौणे लगि ज्यूं निकाल्न,
देख्दे अच्म्भा, वख पुत्र खेल्णा।। 30।।

छाती लगौंदे छ धडक्दे छाती,
मामा कु तौं भेंटण भैर लौंदे।
न जज्ञ तख छ न भुला सदेऊ,
होलो इनो जाग्रत स्वप्न वीं कू।। 31।।

''त्वै कू छ धन्य ऽ सत कू भि तेरा,
ग्यान ऽ तेरो धन्य सत धर्म तेरो।
रई सदा तू सुख शान्ति से भी,
स्व धर्म रक्षा व्रत होव तेरो''।। 32।।

आकाश-बाणी सुणदे सदेई,
द्वी हाथ जोड़ी इनि बिन्ति कर्दे।
''हे देबि! धन्य ऽ धन तेरी लीला,
खोई दिने त्वै न ममत्व मेरो।। 33।।

जौं कू छयो जांणदो प्यारो आपणे,
दुखी छयो जौं का वियोग से मैं।
स्वरूप तेरा हि छन ऽ सभी ये,
माया न तेरी भरमै रख्यां हम''।। 34।।

होयो इनू ज्ञान सदेइ कू धै,
भागी गये मोह ममत्व वीं को।
स्व कर्मु का बन्धनु से त छूटी,
संसार सेतू बिटि पार होये।। 35।।

यो गीत सैदी को बसन्त मास,
औजी सुणाला अपणी दिसौं कू।
दिसा सुणी क खुद बीसराली,
सन्मान कर्ली निज मैति औज्यों।। 36।।

पुछली तऊं से भि त बात मैते,
प्रसन्न होली सुणि बात मैते।
देली तऊं को धन और कपड़ा,
भेंटेलि तौं से निज जाणी मैते।। 37।।

प्रसन्न होई अर नाचि खेली,
स्ये औजि देला सब कू असीस।
''सदेइ कू मंगल होये जन्ने,
होयान उन्ने तुम कू भि सैबो''।। 38।।

❑❑

मैतुड़ा बुलाली ब्वे

मनोज इष्टवाल

जन्म : 29 जनवरी, 1966
कृतित्व : जौनसार बावर संस्कृति एवं सामाजिक परिवेश (ग्रन्थ), दर्द का रिश्ता, फर्स्ट अफेयर ऑफ माई लाइफ (लघु उपन्यास), बिखरा हुआ सा वुऱ्छ (काव्य संग्रह) (प्रकाशनाधीन)
सम्मान : गेस्ट ऑफ ऑनर, सद्भावना सम्मान नेपाल, हरितालिका तीज सम्मान, यूथ ब्रिगेड एक्सिलैंस अवार्ड, नारद सम्मान
सम्प्रति : पत्रकारिता
मो० : 9634865226

चैत्वळि हो अर डांडयूं मा मौळ्यार अर जिकुड़ि मा उलार नि हो इन कन ह्वे सकद ? फ्योंळि को फुलार, घुघुति को घुराट अर जिकुड़ि को झुराट एक दगड़ि होण लगद। डांडि-कांठ्यूं का भीटा पाखा खिगताण लगदन, अनमनि भांति का रिंगळ पिंगळ फूल अर मौळ्यार का कोंपळा यीं मुन्थाको बिगरौ करण लगदन, धरति का ये श्रृंगार का दगड़ै डांडि कांठ्यूं का रैवास्यूं का मन को उलार गीतों मा बगण लग जांदा अर तब हर थाड़ मा थड्या, चौंफळा, चांचड़ि झुमैलौ कि रंगत गांदि उंठण्यूं अर नाचदि खुट़्यूं मा साफ दिखेण बैठ जांद।

सीरी पंचमी भै झुमैलो
के-के को ज्यू ब्वाद झुमैलौ
पळिगो बाड़ि भै झुमैलो

अर

नै डाळी पंय्या जामी
कै-कै का सतन नैडाळी पंय्या जामी
द्यवतों का सन्तन नैडाळी पंय्या जामी।

प्रकृति का प्रति मनख्यूं कि मनख्यात अर द्यवतौं का दगड़ौ भाव यों गीतों मा अर रितूरैण मा दिखेंद बोलदन कि ऋतु पर्वो अर ऋतु गीतु की लोक परम्परा से ही ऋतु काव्य बि रंचे गेनि। मनख्यूं का मन ऋतु अनुसार बदलेणा रौंदन स्वाभाविक बि छ जन प्रकृति को मिजाज बदललो तनि अनुभूति मनख्यों तै बि होण लगदन अर तनि भाव का गीत बि बदलेणा रौंदन यनि रौंद बसन्त मा बासन्ती की रंगत यानि ऋतुराज की ऋतुरैण।

प्रकृति का दगड़ौ यनो मेल धीरे-धीरे खराण लगि गे। नौकरि चाकरि को लोग डांडि-कांठयूं बिटि भैर क्या निरलण लगिन कि वो अपणि यीं रौंत्यळि धरति से बि दूर ह्वेगेनी जब धरति अर प्रकृति का दगड़ौ मेल ही नि रै गि त उनु भाव बि कख रै जाण जन कबि यख का रैवास्यूं को अपणा लोक से रौंदो छौ, बस यानै चैत्वळि बि अर मैत्वळि बि बिसरेण लगिगे।

जब तक लोग अपणि धरति से जुड़यां रैनि त वो मन से अपणा लोक अर लोक परम्परों से बि जुड़यां रैनि यी जुड़ाव छौ। जैन बसन्त का यूं बासन्ती गीतु कि रंगत बसन्ती, झुमैलो खुदेड़ गीत अर चैती गीतु मा बूणि, ये लोक का मनखि बसन्त का बासन्ती गीतु तैं लोक जीवन मा फलदा फुलदा गृहस्थ जीवन पर सुबरौंदा छा कि जन फूल फुलणा जन तनि हंसि खुशि जीवन बि फलणु फुलणु छ।

झुमैलो गीतु मा प्रकृति को बिगरौ अर मैते याद दगड़ा दगड़ि दिखेद अर यामा झुमैलो की टेक दगड़ा-दगड़ि चलदि कि—

मेरा मैत्यूं कि पुगडयों को मेंडा झुमैलो,
फ्योंळिन पिंगळा ह्वेला रिंगळा झुमैलो।
मेरा मैत्यों का डांडा कांठा झुमैलो,
लाल डोला बुरांस का साजला झुमैलो।

ऋतुगीतु मा गढ़वाळ मा सबसे जादा खुदेड़ गीत ही मिलदन, वे कि खास वजै शायद यि डांडा कांठा छन कि धार पोर होंदै अपणों गौं मुलुक नि दिखेंदो अर य खुद जादा कै बेटि ब्वार्यू कि होंद जो अपणां मैत कि खुद मा खुदेणी रौंदन, अर मौळ्यार का टैम पर त य खुद बकिबात कि लगद अर ब्वेकि खुद त क्य बोन? यानै साख्यूं बिटि यो गीत गयेणो छ कि-

मैतुड़ा बुलाली ब्वे बोई होलि जौं कि
मेरि जिकुड़ि मा ब्वे कुएड़ि सि लौं कि।

मौळ्यार यानि बसन्त औण को मैना चैत अर ये टैम पर मन को उलार बि उनि पैजण बैठद जन डाळ्यूं पर कुंपळा पैजदन फूल खिलण बैठदन यी बगत चैती पसारा को बगत बि यानै चैत तैं नाचदो मैनु बि बोले गे होलो चैत मा चैती गीतु का भाव बि खुदेड़ ही मिलद जादा किलैकि दीसा भेंट को जयां औज्यूं का कंठ मा बि इनि गीत बस्यां रौंदन जो दीसा धियाण तै वींका मैत की याद दिलै देदन, चैती मा फ्यूंळि अर सदेई की गाथा जादा गए जांदन अर यूं मा मैत कि खुद खूब पसरी छ।

ये रौत्यळा मुलुक बिटि लोग त चलि गेनि जो छै बि छन तौन अपणां रीति रिवाज छोड़ियालिन पर धरति न अपणों सत नि छोड़ि। धरति को स्वाणु मिजाज अज्यूं बि उनि बिगरैलु छ जन साख्यूं पैलि छौ। आज बि फ्यूंळि मौळ्यार मा मुलमुल हैसण लगजांद अर बुरांस अपणा खिलणै कतामति मा खिगताट कैरी।

यखै उकाळ उंदार अज्यूं उनि छ उकाळ चैढ़ी गौळि उनि उबांद, उंदारिउंदै खुटि आज बि उनि रड़दन, यख रौण वळा मंगर्यू मा पाणि उनि छम्वटु लगैकि पेंदन अर छोया छंछड़ौं को खखळाट बि उनि छ बस यांते मैसूस करदन भोगदरा कम होणा छन दिनोदिन। ❑❑

चैती सदेई गीत

• अनिल बिष्ट

फ्योंळी फुले पय्या फुले एक पती दुपत्ती
हे मादेब सदेई दिशा निरमैत्या खुदेंदी

मौळिगे होली दिशा शिलंगै कि डाळी
जै डाळी पाळि तिन पाणी चारि चारि
शिलंगै कि डाळी मूडी टुळ-टुळ वा रोदीं
हे मादेब.....

लखी पखी डांडी काठियूं घुगूती घुरांदी
गैल्या मैल्या जांदि मा मेल्वडी बासदी
उडि उडि कफुवा न्योली मैत्या देश जांदि
हे मादेब.....

भाई होला जौंका देला टलखी अंगडी
चूडा बुखणं स्वाळी लगड़ी पैतुड़ी
दगड़ा की मैत्या ध्यांण मैत्यूं मा भिटेन्दी
हे मादेब.....

त्वे कु होयूं च दिशा फापडौ सि पांणी
कन होन्दा भै भतीजा मैन नि जांणी
भै भतीजौ बाना दिशा कन ज्यान खोन्दी
हे मादेब.....

लोक गायक
विकास मार्ग पौड़ी

❑❑

गढ़वाळी पछांणक

डॉ० सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

जन्म : 11 अक्टूबर, 1955
प्रकाशन : 8 पुस्तकें प्रकाशित
सम्मान : शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार से सम्मानित
सम्प्रति : माध्यमिक शिक्षा मा अध्यापन
सम्पर्क : ग्राम व पत्रालय पुजार गाँव, चंद्रबदनी, टिहरी गढ़वाल
मो० : 9690450659

दुनियां कि हर चीज अर हर जगा अपणा विशेष गुणों सी एक दूसरा सी भिन्न होंदिन। यूं भिन्न गुण अर विशेषताओं का कारण ही एक वस्तु दूसरी वस्तु की तुलना मां अच्छी या बुरी ह्वैक अपणी विशेष पछांणक बणौंदिन। जख तक गढ़वाळ का प्रश्न छ, यख कि अनेक विशेषता छन जु दुनियां का अन्य स्थानों सी भिन्न अर महत्वपूर्ण छन।

भौगोलिक दृष्टि सी यु क्षेत्र अनेक रंगो सी युक्त छा कखि घणा जंगल त कखि खरड़ा धाल्डा। क्वी हिस्सा गाड़-गदनौं सि भट्यूं छ त कखि पाणी ना का बरौबर। उच्चा-उच्चा चुणंख भेळ भि यख छन अर गैरा-गैरा कुबच्यारा भि। इन्नि क्वी हिस्सा भारि ठण्डन त क्वी गरम। बोलि-भाषा का हिसाब सि भि यखै अन्वार अपणा ढंगै अलगै छ । यख ळ, ड़, ण, न जना अक्षरु सि बण्यां जादा शब्दु को प्रयोग करे जांद। उदारण का तौर पर उमाळ, बिंवाळ, उकाळ, बळद, गौड्ड, बौड़, खौड़, ल्हसण, चणैं, दनकण जना हजारौं शब्द यख का जनमानस द्वारा ब्वन्न अर सुण्णक मिल्दन। यख का लोगु को खान-पान भी अलग ही छ अर वूंको नामकरण भी आंचलिक आधार परह ह्व्यूं छ। झोळी, झंगोरू, फाणू, धापड़, गिंजड्डू, छंचेड्डू, बाड़ी, बड़ील, सात्तू यखा का इना भोज्य पदार्थ छन जो यख ह्वयां अन्न सी बणये जांदन।

यख का लोग पैली बिटि आस्थावन रैन। ये कारण ही यख तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, देवपूजन मण्डाण, घड्याळु, संगरंद का दिन घर-घर पर ढोल बजौंणू, चैत का मैना परिवारू कि खुशहाली का वास्ता ढोल-दमौं का साथ-साथ मंगल गीत लगाणू, पंचमी तैं जौ की हर्याळी बांटणी जनी कै परम्परा गढ़वाळ की धार्मिक भावना तैं व्यक्त करदन। गढ़वाळ मां खासकर इलाज तंत्र अर आयुर्वेद विधि सी करे जांद। या भूमी जड़ी-बूट्यों को भण्डार छ। यख इनि-इनि जड़ी-बूटी छन जौं सि दुनियां की जादातर बींमार्यों को इलाज ह्वै सकद, पर य हमारी अज्ञानता छ कि हम व सणि पछांणि नि सकदौं अर अजाक बणिक नुकसान पौंछौंदौं।

गढ़वाळ मां उन त हरेक पर्व पर खोळा-मेळौं को आयोजन होंद पर बैसाख एक इनु मैनु छ जबारि प्रत्येक दिन जगा-रिंगळा झुनकौं पैरिक वख जांदन। यूं दिनू गढ़वाळ मां बड़ी रैं-पैं रंदी। अब त जमानू धीरा-धीरा कै तैं बदलेण लगी पर एक समैं गढ़वाळ मा इनु भि थौ जब कै थौळ मां

जनानि सिसफूल, पौंछी, झिंवरि, जैजी, पौटा, खखळा, गुलाबन्द जना कै गणौं सी सजीक जांदी थै। हक्कि तिर्प गौं –गौं बिटि ज्वान–ज्वान बैख हाथु पर मोटा– मोटा लाठौं लीक ढोल–दमौं दगड़ि नान्चदु–नाचदु जांदा था। गढ़वाळ की पछांणक कायम कन्न मां ई परम्परा को भौत बड़ हाथ छ।

यख का पाणी, बथौं अर माटा मा बड्डु रस छ, जांसि यख कि धरति मां काफळ, घिंघारू, हिंसर, फळेण्डु, किनगोड़, खैंणा, केमू, कर्वन्दा, तिमला, ब्योडु, बुरांस जना कै रसीला फलु का डाल़ा अपण आपी उगि जांदन।

गढ़वाळ का लोग भारि सौकीन रैन। ब्वगट्यों कि लड़ै करौंण, तास ख्यन्नु, रस्सा कस्सी, नौर्ता, मण्डाण, घड्याळू, बाद्यों को नाच, अखाणा–पखाणा, कथा–वार्ता, गीत–पवाड़ां लगाणों, हंसी–मजाक कन्नो जना कै काम ऊंका मनोरंजन का साधन रैन। खाणि–पेणि का हिसाब सि यख का लोगु कि अपणि खास पछांणक छ। जु मजा यख का अन्न सि बण्या रोट, आर्सा, स्वांला, पकोड़ा, मर्स्वालि अर पापड़ि खाण मां औंद उ सायद हि सैरू – बजारू कि मैंगि सि मैंगि मिठयों मां हो। यख का चौंळु–झंगर्याळु का बुखणौं अर चूड़ौ बुकाण को बि अपणु अलगै स्वाद छ। बसगाल् का मैनौं चर्चरा–बरबरा लोण–मर्च दगड़ि हरीं काखड़ि खाण अर सुलबुल्या भड्याई ताति–ताति मुंगरि बुकाण मां भि जु आनन्द छ उ तरबूज, खरबूज खांण मां कबि नि ह्वै सकद। कतना भाग्यशाली छां हम जु इनि रसीली धरति मां जनम लीनी।

व्यवसाय की दृष्टि सी भी गढ़वाळ की अपणी एक विशेष पछांणक छ। यख का लोगू को पेसा मुख्य रूप सी जाति अर धर्म का आधार पर बट्यं छ। बरमवितीं, सरोला, पुजारी, मिस्त्री, ल्वार, सुनार, धुनार, कोली, दास, दर्जी, बाद्दी जना कै पेसा यख पीढ़ी दर पीढ़ी थोड़ा–भौत परिवर्तन का दगड़ि समाजमा विद्यमान छन। यख का लोग आतिथ्य सत्कार, सुशील भोला–भाला, देशभक्त का साथ ही साथ सुख–दुख मां साथ देण वाळा, मिलि– जुलि तैं काम कन्न वाळा, परिश्रमी, ईमानदार अर कै गुणों सी युक्त छन।

आवश्यकता छ ई बात की, कि हम गढ़वाळ की सबि परम्पराओं, रीति–रिवाजों की तन–मन–धन सी रक्षा करौं, जॉसी हमारी या संस्कृति दुनियां कि अन्य संस्कृतियों का साथ अपणो महत्वपूर्ण स्थान आसानी सी बणै सको, अर हम भी ई बात सी गर्व को अनुभव करि सकां। गढ़वाळ वा धरती छ जख देवतौंन अर ऋषि मुन्योंन अपणू जीवन आनन्द सी बितैतैं दुनियां को कल्याण करि।

नाता–रिस्तौं का हिसाब सि भि यख कि पछांणक अलगै छ। बडा, बडी, काका, काकी, भेना, बै–बुवा, लड़ीक, जीओरू, ज्यरजु, दिदा–भुला, बौ, स्यालु, बैण, जनानी, मालिक जना कै नौ इना छन जो गृहस्त्यों का सभी रिस्तों तैं एका ह्क्का सी जोड़दन।

संगीत प्रिंय होणू गढ़वाळ का लोगों को जन्मजात गुण छ। एं हि वास्ता यख का जनमानस द्वारा ढोल, दमौं, मसकबाजु, सिणैं, हुड़की, डौंर, थाली, बांसुळि अर डौंर–थाऴी इना चमंत्कारी वाद्ययंत्र छन जो देवतौ अर भूत्तू सणी भी जागृत करि देंदन। गढ़वाळ का वाद्ययंत्रों को जादातर उपयोग यख का दास अर बाद्दी जाति का हरिजन पेशा का रूप मां करदन, जो कि वूंकि आजीविका को एक महत्वपूर्ण साधन हौंद।

कला का क्षेत्र मां बि गढ़वाळ को विशेष महत्व छ। यख का मन्दिरों का भित्ति चित्र, मूर्ति, मन्दिरों की बनावट देखिक हरेक व्यक्ति आश्चर्य मां पड़ि जांद, किलैकि यख का इ मन्दिर जौंकि मूर्ति साकार अर सप्राण लगदीन आज कि निव बल्कि वै जमानाका बण्यां छन जबरि गढ़वाळ मां औंण जाण का क्वी भी साधन निथान कै दिनों का बासा बसिक लोग लोण, गुड़ जनि साधारण चीज्यों लेण का खातिर ऋषिकेश अर कोटद्वार जांदा था। तकनीकी शिक्षा त रै दूर पर सामान्य शिक्षा लेण की भी क्वी सुविधा नि थै, तै जमाना का लोक कलाकारोन साधारण छेणी अर हथेड़िन पत्थर तरासितैं अपणी कला को जो उत्कृष्ट परिचय दीनी उ अविस्मरणीय अर स्तुत्य छ। मात्र पत्थर पर ही नी वल्कि लकड़ी पर भी यूंन अपणा बसूला अर न्यांण सी ज्वा चित्रकारी करी वींसणी आज का साधन सम्पन्न अर प्रशिक्षित कलाकार लाख प्रयास का बावजूद भी नी करि

सकदन। उदाहरण का रूप मां गढ़वाळ का हरएक गौं मां जीर्ण शीर्ण अवस्था मां विद्यमान तिबार्यों का खम्म, दरवाजा, खिड़की औंण वाळी पीढ़ी तैं गढ़वाळ की पुराणी पछांणक बतौंण अर प्रेरणा लेण की जरुरत छ इतना ही ना वल्कि खेती–बाड़ी मां काम औंण वाळा हथियार बणोंण, साधारण गृहस्थी का बास्ता उपयोगी सामग्री मुरेठा, मांदरा, जूड़ा, दौं, मुसगा, रोटाना जनि कै चीज्यों बणोंण मा बि यख का हस्तशिल्पी आज बि ईं परम्परा कायम रखण मां लीन छन लोक का कलावंत।

अपणा ए छोटा सी लेख मां गढ़वाळ का कुछ चामत्कारिक बातों पर लिखणू भी मैं जरूरी समझदौं। देवता की दृपटा देण पर भूत–भविष्य अर वर्तमान का बारा मां वाक्की कू सच–सच बोलणू, हाथ पर हरियाली जमौंणू, जौ–जनानौं अर बालबच्चों पर भूत लगण सी बानि–बानि का छलबल दिखौंणु, झाड़कण्डी द्वारा भूत भगौंणू, सर्प–विच्छी को जहर मंत्र द्वारा हर्यैंणू, दांत, कान, सिरदर्द, पीलिया जनि कै बीमारी तंत्र–मंत्र सी ठीक कन्नू, घड्याळा लगाण सी नागर्जा नरसिंग को दोस शान्त कन्नू जना कै काम यख की संस्कृति की चामत्कारिक विशेषता छन।

गढ़वाळ का बारा मां जनु ब्वल्दन कि या धरती वीर अरं भड़ की मातृभूमि छ, वास्तव मां यख समय–समय पर बड़ा–बड़ा वीर अर भड़ पैदा ह्वैन, जौन अपणा जीवन मां असम्भव सी असम्भव काम करिक दिखायन। समाज की भलै का खातिर अपणी या अपणा पुत्र की बलिदेण, सक्य सी जादा बोझ उठौंण, भौत जादा भोजन कन्न जना कै काम गढ़वाळ का ज्ञात अर अज्ञात अनेक लोगून करिन।

व्यवसाय की दृष्टि सी भी गढ़वाळ की अपणी एक विशेष पछांणक छ। यख का लोगू को पेसा मुख्य रूप सी जाति अर धर्म का आधार पर बट्यं छ। बरमवितीं, सरोला, पुजारी, मिस्त्री, ल्वार, सुनार, धुनार, कोली, दास, दर्जी, बाद्दी जना कै पेसा यख पीढ़ी दर पीढ़ी थोड़ा–भौत परिवर्तन का दगड़ि समाजमा विद्यमान छन। यख का लोग आतिथ्य सत्कार, सुशील भोला–भाला, देशभक्त का साथ ही साथ सुख–दुख मां साथ देण वाळा, मिलि– जुलि तैं काम कन्न वाळा, परिश्रमी, ईमानदार अर कै गुणों सी युक्त छन।

आवश्यकता छ ई बात की, कि हम गढ़वाळ की सबि परम्पराओं, रीति–रिवाजों की तन–मन–धन सी रक्षा करौं, जॉसी हमारी या संस्कृति दुनियां कि अन्य संस्कृतियों का साथ अपणो महत्वपूर्ण स्थान आसानी सी बणै सको, अर हम भी ई बात सी गर्व को अनुभव करि सकां। गढ़वाळ वा धरती छ जख देवतौंन अर ऋषि मुन्योंन अपणू जीवन आनन्द सी बितैतैं दुनियां को कल्याण करि।

❑❑

फार्म-IV

(नियम 8 देखिये)

धाद

1.	प्रकाशन स्थान	:	पौड़ी
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम:	:	गणेश खुगशाल 'गणी'
	राष्ट्रीयता (क) क्या आप भारत के नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	126, विकास मार्ग, पौड़ी-246 001
4.	प्रकाशक का नाम:	:	गणेश खुगशाल 'गणी'
	राष्ट्रीयता (क) क्या आप भारत के नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	126, विकास मार्ग, पौड़ी-246 001
5.	सम्पादक का नाम	:	गणेश खुगशाल 'गणी'
	राष्ट्रीयता (क) क्या आप भारत के नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	126, विकास मार्ग पौड़ी-246 001
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हैं तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हैं	:	नहीं

मैं गणेश खुगशाल 'गणी', एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

ह०—
(गणेश खुगशाल 'गणी')
प्रकाशक

दिनांक : 14 मार्च, 2017

माटी की काया को बसन्त (बसन्त) ऐगे

• कन्हैया लाल डंडरियाल

पसरीं छ मुँड जून, लुकि गैन गैणी
रीठौं की मेलि रै गैन, ऊँकी निशाणी।
गल्वड़्यूँ की पख्यट्यूँ मा, भ्वींकंप ऐगे।
माटी की काया को बस'न्त ऐगे।

जम्यळी की डाळि-बोट्यूँ को, पोड़िगे ठ्यक्का,
गिचि का संगाड़ - मोर, दे गैनि ध्वक्का।
डरदी यकुलि जीभ, लपटाण लैगे,
माटी की काया को बस'न्त ऐगे।

फौंकी टुटीं सी हत्ति हलदन बथौंला,
भंगुलै-सि केड़ि खुट्टि चलदन धिक्कौंला।
गंगा सिळौण्याँ फूल हैंसण लैगे,
माटी का काया को बस'न्त ऐगे।

भट्यूड़ की सार्यूँ मा, रूणा छन स्याळ,
रयेंसु की लगुल्यूँ का, सुखि गैनि झाल
पुटगा का फाँग आड़ो, अंदडौं को रैगे,
माटी की काया को बस'न्त ऐगे।

माया को दारु पेक, अटगू नी ब्लाया।
जति घरु दौड़ौ लोळे, तति घाव ह्वाला।
काली का थान समणि, खड्ग धरे गे,
माटी की काया को बस'न्त ऐगे।

अर्जुन को गाँडीव, बणि गे यु तीग
कुँडल कवच, आयु माँगीक ल्हीग।
गौळी का गाळ फर, शंख बजी गे,
माटी की काया को बस'न्त ऐगे।

❑❑

फ्यौंळी

• भगवतीचरण निर्मोही

ऐगे फागुण को यो मैना, फ्यौंळी तू फूल फूल,
फैले बसन्त सब बणू बणू, तू भी मेढियों मा झूल झूल,
मैं आजि पड़यूं छौं बड़ी दूर, तू भी आंख्यूँ की छई ओट,
पर त्वै सणि समळि समळ्यीकी, जिकुड़ी पर लगदी बड़ी चोट।

तू नई उलारी ऋतु ल्हेकी औन्दी बौड़ौन्दी भुली खुद्द,
तू कदी बटोई सणि उदास, त्वै देखी भुलदन सभी सुद्द,
छै तू रैबारू ऋतुपति की, ऐकी तैं देन्दी इनो बोल,
ऐगे बसन्त ऐगे बसन्त, हे दुनियाँ अपड़ी आँखि खोल।

बिसरौं मैं तेरो कनू करी, बिगरैलो सुन्दर भलो गात,
हलबलो कलबलो मखमल सी, मुरझौन्द जरा सी लगै हाथ,
घुँघटी गाड़िकि मेंढ्यूं मा बैठीं रन्दी तू इनू टुप्प,
पीलि चदरि ओढ़ि कि तैं, बैठीं हो ब्योलि जनू चुप्प।

हिंस्रे किनगोड़ी चौलाई सकन्यो अलमोड़ो डुँडबिराल,
राडो लय्या, पय्या, आरु, धौलो भी फूलद लाल लाल,
फूली फूली की बाग बणू, करदन रोंतेलो बणै झक्क,
सब छन सुन्दर ये भला भला पर त्वै डेखीकी सभी फक्क।

फ्यौंळी ! त्वै सणि क्या आज सुणौं, आपणा दुक्खी मन को उमाळ,
ये दुखी उलारा प्राणी को, बौळ्या को सी बणिगये हाल।
ओन्दू छौ जब वो चैत मास, फेंक्दा छा देळ्यूँ माँगे फूल,
वै बाळापन की याद करी, चुभणू जिकुड़ी पर एक शूल।

सरसरसर बिनसरि को बथौ, जाँदा छा पर हम दौड़ि दौड़ि,
अपणी ठुपर्यों पर फूल भरी औंदा छा झटपट घरु बौड़ि।
कख ग़ैने वो दिन वो दगड़या, कख गये उमर कखगै उमंग,
कख गै वो सुन्दर समय हाय, कखगै सारो राग रंग।

तू झुमदि झुमदि ही रैली, जब जब आलो प्यारो बसन्त,
बिसरैली अपणी सरी खुद बौड़ी बौड़ी ऐली तुरन्त।
मैं कू पर दुर्लभ होइ गैने, दिन बीत गैन सो गैन बीति,
अब चला चली का दिन ऐने फीकी ह्वे गैने सबि रीति।

ये दुक्खी मन मा कभी कभी, उठदन ऐ की कत्ती तरंग,
जिकुड़ी निर्मोही करी करी, मैं सदा दबौन्दू छौं उमंग।
हे प्रिय बसन्त की दगड्याणी, ले ले मेरो आशीरवाद,
तू खुशी रई पर कभी कभी, मेरी भी करदो रई याद।

❑❑

गढ़वाळ का इत्यास की कैला

कमल रावत

जन्म : 1 जनवरी, 1975
शिक्षा : एम०ए० थिएटर
सम्पर्क : ग्राम व पत्रालय-खण्डाह, पट्टी कटूलस्यूं, पौड़ी गढ़वाल
सम्प्रति : कृषि एवं दुग्ध उत्पादन

बाघ आंद लुकदो-लुकदो, कुकुर आंद भुकदो-भुकदो, ठीक ईं तरज पर बाघ जन बणी महीपत ठाकुर न राजमोहल सिरीनगर मा परवेश करी। राजमोहल न अबी ठीक से अपणा आंखा बीति खोलि छा। चैता मैने वीं सुबेरी कैन बी वे अर वेका द्वी सौ तलवार धारी अंगरक्षक सिप्पैयूंन पर शक नि करि, न ही कैन रोकि-टोकि। किल्लै कन छौ कैन यन? आखिर स्यू श्रीमंत राजा दुलारामसाह को मुगतियार अर रिश्ता मा कुटुम्ब को दादा लगदो छौ। सौनक गोत्री, परमार वंशी। पुश्तियूं बटि वे का पुराणा 'बद्री विशाल' कि गादी, सैणा सिरीनगर कि राजगदी क सेवक छा। गढ़देश पर वूं को एक क्षत्र राज छौं।

कारबारी साल बुटोला समेत सिरफ कुछेक दरबारी वेका विश्वस्त, वे से मिल्यां छा। अंगरक्षक सिप्पैयूंन राजधानी अर राजमोहल घेर दिनि। साल बुटोला दगड़ि जैकि ऐंच त्रिपुरा महीपत ठाकुरन स्वर्ग होयां पन्द्रह बरसा श्रीमंत राजा दुलाराम क मुरदा शरीर क दरशन करीन। सैद वू शंका दूर करण चाणो रै हो कि वाकई 'बोलांदा बद्री' स्वर्ग ह्वेन कि ना। राजमोहल मा वेका सिप्पै जगा-जगा खड़ा दिखेण लगीन। अब रणिवास कि बारी छै। अपडा आदमियूं दगड़ी राणिवासे देहली पौछीं ठाकुरन धै लगै—

''कैला, हे कैला।''

''ऐ गयूं।'' भितिर बटि कैला धाई भाग-भागी, मुंड मा सपकू सम्मालदो ऐई, अर महीपत सामणी खडु देखीक धक रै गि, जन बोलयो वीन सचमुच बाघ देखीली हो। ''हे ठाकुर तुम! अर फिर झट करी बोली ''समन्या''।

''समन्या, अबी-अबी यख पौछयूं, नाती श्रीमंत माराज दगड़ी जरूरी राजकाजै सलाह मशवरा करण छौ पर यख ऐ कि पता चली कि वू स्वर्ग ह्वेगेन। मैं रैबार किलै नी भेजे गी? क्या मरयां मनखी कि सद्गति नी होदं?'' एक सांसा मा, महीपत बोलीगे।

''वू, वू ठाकुर, तुम अर कुँवर भानसाह यख बटि दूर अपड़ी ज्युला जागीरों मा छावा, तुमुन दादा होण क खातिर अग्नि नी देण छै यांक बाना कुँवर भानसाह लाणो हरकारा धाति धनारि पठायां छन।'' थूक घूटी कैलन सफै दे।

''मी गढ़देश को मुगतियार छौ, अर ये राज्य क संचालन अर सुरक्षा क खातिर मैंते सर्वप्रथम मृत्यु खबर होण चैणी छैं'' गुस्सा पेकी अर अफ तें सम्भालीक वेन बोली- ''मेरा पिसनै-पिसनै कुँवर भानसाह भी पौछंण वाळ च। उफल्डा फुन्ड पौंछ गै होलो मी अगनै वे को स्वागत करणो अयूं, अब राजगदी पर वेन ही बैठण।

''अच्छा कुँवर पौंछण वाळ च?'' कैला कि आंखियूं मा चमक ऐगी।

''हाँ हाँ, तू यन कर राजा तें पैराये जाण वाळ राजसी लता कपडा, मुकुट पगड़ी, गजगाह, खाण्डो, सब लयो, हर मेरा सामणी धर दी। बिजाम दिन ह्वेगेन राजगदी खाली नी रखे जांद।'' महीपतन उलाहणो देकी बोलि।

''मि अबी आंद।'' कैला उल्टा खुट्टौन भितिर रणिवास भागी, अर थोड़ी देर मा झट करी, बडी-बड़ी ताम्बे परात, दासियूँ मु पकड़ैकी, राजसी लता वे पर धरयां, महीपत ठाकुर का सामणी धर दिनी।

''लिया ठाकुर सम्भाला। मी कुँवर भाना तें देखदों।'' ये बोली वा दासियूँ दगड़ी कुँवर देखणो हडबड़ी मा राजमोहला भैर भागी।

❖ ❖ ❖ ❖

इकहरी गाति पर भगोया अंगिया- घाघरी पैरीं कैला ठोस ईच्छा शक्ति की जनानी, राजा श्यामसाह कि हिमाचली राणी क डोला दगड़ी दैजा मा ऐई छै। राजा श्यामसाह गंगाजी मा किश्ती डुबण से दरबारियूं समेत स्वर्ग ह्वे छा। राजा दगड़ी सती होदं दां राणीन दुलारामसाह अर बाला भानसाह तें वींकी कोळि मा रखी बोलि छौ- ''कैला यूं ठीक से सम्भाली।'' अर दगड़ा मा सुरक्षा का वास्ता एक खाण्डो भी दिनी जु अब तलक वीं क कमर मा लटगणूं च। राजराणी कि जगा वीकों ओदां राजमाता को ह्वे अर राजा कि सुरक्षा वी का जिम्मा ऐई। वजीर, दीवान, दरी, पोरी, चाकर सबूं तें वींक ताकत-अधिकार को अदांजा छौ। कैलन अपड़ी दूधी पिलै कि द्वि कुँवर सैंतीन पर ये चैता नाचदा मैना, पूरणमासी की होरी क दूसरा दिन, छरोळ्यूं तैं पन्द्रह बरसो राजा दुलारामसाह गंगाजी क छाला भीटा बटि तौळ गंगलोड़ों मा पोड़ी, मुन्ड पर चोट फटाक आयी अर राजमोहल ऐकी पांच-सात दिनों मा वेन पराण छोड़ दिनी। दिवगंत राजा दुलोरामसाह को मुर्दा भितिर आठ-दस दिन बटि राजमोहल मा सहेजी रखयूं च।

कैलान अब मरी हैंका दिन राणी तैं कन मा मुख दिखाण? हाँ भरपाई सिरफ यान ह्वे सकदो च कि अब राजगदी पर दुलारामसाह को छोटु भुला कुँवर भानसाह गादी पर बैठो। वीं को जीवन को अब यू ही धेय छौ। पर ये धेयन वी चिन्ता ह्वेगी। चिन्ता क्या ह्वें, चिन्ता वीं खाण लगी। कखी क्वी विघ्न नी पोड जाव। विघ्न भी क्या कि विघ्न घौर ही छौ, पचास बरसो, कुँवर को 'कक्या दादा', मुगतियार, प्रचंड, भुजदंड, गरबभजंन, फौजदारूं को फौजदार, बमुण्ड को जागीरदार, रौबदाब वाळो ठाकुर महिपतसाह। जैकी नजर राजगदी पर छै, क्या नि करयूं छौ राजा को वे कु तैं? पर कुकुरो पेट टुकड़ोन नी भोरेन्दु। सैब ऊँच-नीच जाणी समझी कैलान कुँवर भानसाह लाणो हरकारा पठै छा थाती धनारी, भिलंगना पार राजा दुलारामसाह कि मृत्यु खबर प्रजा अर दरबारियों से लुकायेगी। पर क्या वा यख मा सफल छै?

❖ ❖ ❖ ❖

दस खोळी, बावन बुर्ज अर बिजाम परकोठोन घिरयां 'बोलदां बद्री' क मोहल बटि कैला भैर ऐई अर इनै-उनै नजर डाळी, क्वी नी दिखै। वीं कि आंखी कुँवर तैं खुजणी छै, वीं क पिसनै-पिसनै दौडणी वीं की द्वि-तीन दासी। चौकोर कटवां पठालिया चौक ह्वेकी कैला पश्चिम दिशा कि खोळी बटि भैर चली ऐ, जान कुँवर भानसाह शीतला रेती, गोरखनाथ मढ़ि जनै बटि आंद दिखयों। पर कुँवर को कखी अता-पता नि छौ, तबरी जयकारों की आवाज वीं क कंदुणु मा पोड़ी, निराश हुंई वा चौंकि, टकटकी ह्वे, अर खुशी को ल्यो वीं क शरील क नसू मा दौडण बैठी या जाणी कि यी जयकारा कुँवर भानसाह को तें लगणा छन, जो कखी नजिक हि आणो च। कैलान खुशी मा अपडा कन्दुणु मा हाथ धरी बन्द कर दिनी। वीं को नौना समान कुँवर राजगदी पर बैठण वाळ च। पर क्या वाकई यन होण वाळो च? कैलान कन्दुणु बटि हाथ हटेन अर गौर करी फेर सुणी। अरे! जयकारों कि आवाज त राजमोहल बटि आणी च। वीं को अंदाजा सही छौ। ये क मतलब कखी कुँवर भानसाह हका बाठा बटि राजमोहल त नी पौछगें अर सिप्पै दरबारी वे का जयकारा लगाणा छन। लगै वींन दौड़ वापस राजमोहलऽ तैं

अर सीधा देहली ह्वेकी रणिवास क बगल वाळा बड़ा कमरा मा, पिसनै-पिसनै दासी भागणी।

फटीं आंखोन वीन देखी कि सिप्पै ठाकुर महिपत तैं राजसी लता कपड़ा पैराणा छन, मुंड मा सुनहरो मुकुट-पग ध ार्यूं च, जू वीन थोड़ी देर पैलि ठाकुर महिपत तैं कुँवर भानसाह पैराणो सौंपी छा। अंगरक्षक सिप्पै जोश मा जयकारा लगाणा छन- ''राजा महिपत की जय।'' राजमोहल कि सुरक्षा करण वाळा सिप्पै-गोलदार, दास-दासी सबी घुण्डो क बल बैठयां छन, वूं क मुण्ड ऐंच तलवार तणी छन। कई रोणा छन। राजा दुलोरामसाह को मुर्दा तौळ लये गे छौ।

कैला को ज्यू धक्क रै गी। ''ठाकुर महिपत'' कैला अफ तें सम्भाली चिल्लैई- ''या राजगदी कुँवर भानसाह कि च, त्वे धोखा करी राजगदी हथियोण शोभा नी देदं। बडु ऐई राजा बणण वाळ, अपडी शकल देख, अपडी उमर देख। औतु ह्वेकी गददी पर बैठण स्याणी करणी छै .....।''

''अपडु गिच्चु बन्द कर, द्वि टका कि दासी।'' महिपत क विश्वस्त धामसिंह न कैला टोकी। कैला तैं गुस्सा यन ऐई कि वीनं जोर करी महिपत तें धक्का दिनी कि स्यू पूठो क बल पिछनै पोड़ी अर मुंड मा को सुनहरो ठांठो दूर जैकी छिटकी। कारबारी साल बुटोला तैं स्वामिभक्ति देखौणो मौका मिली अर वेन निकाळी तलवार अर कैला क गौळा की सिस्त वार कर देनी, कैलान अफ बचाणो मुण्ड पिसनै करी अर द्वि हाथ उठै कि अगनै करी दिनी। 'खटाक' करी द्वि हाथ कटी फर्श मा पोडीन अर दगडा मा राज भक्ति क प्रतीक हाथुं मा पैरयां 'सोनचुड़ा' बी 'झन्न' करी फर्श मा पोड़ीन। अब ना हाथ कामा छा, ना सोनचुड़ा ही राजभक्ति क कामा छा। सबुं क जुगड़ा कांप गेन। ल्वे कि खतरी मची, कैला भौंया पडी तड़पण लगी।

रणिवास को कारबारी, कैला को नौनु घुतसाल अगनै ऐई, निकाली तलवार अर ''अपड़ी मां क खसमा'' बोली वेन साल बुटोला पर तीन-चार खचाक तलवारे मार दिनी। बुटोला भी भोयां पोड़ी। राजमोहल मा चिल्लाणे भगणै आवाज आण लगीन। दरबारी-सिप्पै द्वि गुटों मा बटेण लगीन। नगदवान भड़ अर कुछेक सिप्पै घुतसाल क पिसनै ऐईगीन। तब तलक सिप्पैयूंन महिपत खडु केरलि छौ, महिपतन एक झणझणी नजर घुतसाल क पिसनै खड़ा सिप्पैयूंन पर डाळी, माना पूछणो हो कि कै कै कि मौत ऐई च? सिप्पै पिसनै बटि हट गेन। रै गिन त सिरफ घुतसाल अर नगदवान भड़। खेल कैन देखी विधाता को? जू ब्याली तलक कैला अर कुँवर भानसाह कि रक्षा कि कसम खाणा छा वू अगनै नि ऐन। मौत मुण्ड म खड़ी छै।

फिर क्या छौ? तलवारूं कि आवाजन राजमोहल गूंजगे। थोडी देर म घुतसाल, नगदवान भड़ अर महिपत क चार-छै सिप्पै कटयां केळा डाळा सी फर्श मा पोड़्यां छा।

यु सब बड़ी जल्दी मा घटी।

❖ ❖ ❖ ❖

धाम सिंह भोयां पडयां सुनहरो ठांठो उठै अर महिपत क मुण्ड मा धरी, सुरुक करी कन्दुणु मा बोली- ''ठाकुर राजमोहल अर राजधानी पर हमारो कब्जा ह्वेगे।''''शबाश।'' ठाकुरन धाम सिंह पीठ थपथपै। अंगरक्षक सिप्पै नारा लगाण लगीन, 'श्रीमंत राजा महिपत की जय।' ठाकुरन हाथ उठै कि वूं शान्त होणो इशारा करी। वे क कन्दुण मा कैला कि कराहणे आवाज सुणै, वेन गौर करी बिंगी त अपडा समर्थकों क बीच ल्वेन लथपथ फर्श मा कैला तडपणी छै। वींको ही गुगंडाट सुणेणो छौ। ठाकुर वीं क नजीक पौंछी।

''अच्छो ईनाम देई त्वेन मेरी राजभगती को ठाकुर, त्वे पर थु पोड़ूंया।'' कैलान आंखा बंद करदो-करदो ताकत लगै कि बोलि।

''चुप कर रंडी'', अर ये बोली ठाकुरन वीं क कमर मा एक लात मार दिनी।

''ना ठाकुर यन पाप नी करा।'' ल्वेन लतपत सात बुटोला चिल्लैई। वू बि आखिरी सांस लेणो छौ। द्वि सिप्पैयूंन बुटोला सहारू देकी उठै वे को गिच्यू गबलाण लगी।

''मांग बुटोला, अपड़ो ईनाम-किताब मांग, तेरा भेजयां रैबारन मी यख अब राजा बणणो छौं, नितर फेर बैठेयेली छौ तें कैलान राजगदी पर छोटु बाळा नौनु। बुटोला, जगा जागीर मांग, मी देलो।'' महिपत करण समान बणीगे।

''ठाकुर, मैं कोट कारगी, जखण्ड, ढांगू भडांल्यूं मा जागीर चैणी च।'' बुटोला क आखिरी बोल मुख बटि छुटिन।

''लेखवार रतूड़ी बुलाये जाव, अर जो-जो बुटोलन बोलि सब चांदी क भाषा पत्र मा 'अकरा' लेखी बुटोला क

कुटुम्ब मा दे दिये जाव। जो मेरी तरफां रालो वे खुणी जान हाजिर च अर जो मेरी खिलाफत करलो वे सणी मेरी तलवार खैकांर कर देलि। महिपत छौ मी महिपत।'' ठाकुर तलवार हवा मा उठै कि गरजी। सिप्पैयूंन जयकारा लगे-''राजा महिपत की जय।''

''धाम सिंह'' महिपतन अगनै बोलि।

''हुकुम ठाकुर।''

''मेरा खातिर आज जू काम ऐन, जौन प्राण दिनी, वूं को अंतिम संस्कार राजघाट पर करवये जाव, वूंका कुटुम्ब न्यौते जावन। सैरो राजमोहल गंगाजलन धुये जाव। कैला, घुतसाल अर नगदवान क मुर्दा खिखोड़ी ली जै कि गंगाजी बौगे दिया, राजद्रोहीयूं तें अग्नि नी दियेंदी।'' महितपतन आदेश दिनी।

''जो आज्ञा।'' धामसिंहन हुंगारो लगै।

वीं रात व्याखुणी बगत बटि उच्छप मणये जाणो रै, ढोल-दमौं भौंकारा बजणा रैन, बादेणीयूँ क घाघरा रिंगणा रैन। खूब चखळ-पखळ ह्वे। ठाकुर महिपत अर वेका सबी अंगरक्षक सिप्पै राजमोहल अशुद्ध होण का कारण भैर चौक, तप्पडुं, अमुवा बागवानो मा तम्बू मा स्वे पोडिन। ठाकुरै सुतौरी खाट आमा डाळा मूडी लगी। पर ठाकुर क आंखो मा नींद नी ऐई। झणी किलै? रात उठी त देखी कि धाम सिंह दगड्या फौजदारों दगड़ी खाणो-पेणो च।

''धाम सिंह'' महिपतन आवाज लगे।

''हुकुम ठाकुर'' भाग-भागी पीठ मरद धाम सिंह पौछिं।

''नींद नी आणी, जू पेणा छां मैं खुणी बी लावा।''

''अबी हाजीर होदं।'' धामसिंह तें अचरज ह्वे अर वेन लैकि ठाकुर तैं एक भोरयूं लोटय्यां पकडै दिनी। घड़ी एक बाद ठाकूरै जोर-जोर से रोणे आवाज सुणै, धाम सिंह फेर भाग-भागी वे मु पौंछी। ठाकुरन वे देखी अर शान्त ह्वेकी पूछी-''त्वे तें डाळा पर काच्चा आम दिखेणा छन?''

''हाँ ठाकुर, देखेणा छन, यि हर साल लगदन।''

''हर साल लगदन क बच्चा। मैं बीपता च। मी जब बी रूढ़ियूं मा यख आंद छौं त कैला आमै खट्टी-मिट्ठी चटणी बणै कि मैं खलांदी छै। वीं को नौनु घुतसाल मैं भौत माणदो छौ, दादा-दादा बोली मेरी कोळी मा चढ़ जांद छौं।''

''अच्छा'' धामसिंहन हुंगारो भोरी।

''अर स्यू लाटु नगदवान भड, मैं को गंगाल बटि मांछा मारी लांद छौ, मांछो को भरी काल छौ स्यू। बडु सल्ली।''

''अच्छा, पर ठाकुर सी तीनी अब यीं दुनिया मा नी रैन।''

''जाणदो छौं, तबी त रोणू छौं। धाम सिंह तू एक काम कर।''

''हुकुम ठाकुर, ह्वे जालो।''

''तू, चार-छै सिप्पैयूं ल्हेकि गंगाजी क छाला-छाला जा, हाथकट्टा फूणै वूं तिन्यूं क मुर्दा छाला लग्यां होला। तू वूं ढूंढ़ी, वूं को अंतिम संस्कार वखी करी दे। उख फुनै लखड़ो कि कमी नी।''

''.....'' धाम सिंह चुप रै गी।

''ठीक च। ये करवे दी, सुणलि त्वेन।'' महिपत दहाड़ी।

''सुणलि ठाकुर..... पर यू त थुकयूं चटण ह्वे। आज दिन मा हमुन वूं खिखोड़ी, सबूं क सामणी गंगाजी सिरैन। लोग बोलला ठाकुर हाथन लिखदो अर खुट्टन मिटोंद। काखड़ अफी मुतो अर अपड़ी छिबड़ाटन डौरो।'' धाम सिंह एक सांस म बोलगे।

''चुप कर उल्लु क घस्सा, बडु ऐ लोखूं कि चिन्ता करण वाळ, अबे लोखूं क भौणी मी राजगदी नी पै सकदों। अब प्रजा त राज कि स्वेण समान होदं। दिन अर रात क आदेश स्वेणीयूंत तें अलग-अलग होदंन। ऐगि समझ म तेरा, जा जू बोलेणो च, वू करी औ। वे क बाद मैं सणी खबर कर।''

''आज्ञा ठाकुर, जी आंद।'' बोली-ऽ चड़म उठी धाम सिंह अर कुछेक सिप्पैयूं ल्हेकि गंगाजी कि तरफां चल पोड़ी अर गंगणाणू रै-''राजभगति को ईनाम मिलदो ही मिलदो च, चाह कै बी रूप मा हो। ठीक बोल्यूं च अपड़ो मारो छैल फेंको, भैरो मारो भेल घाम ढोळो।''

ठाकुर महिपत तैं अब गैरी नींद पोड़गे छै।

❑❑

चण्डीगढ़ मा उत्तराखण्ड महोत्सव

• दीनदयाल सुन्दरियाल

चण्डीगढ़ स्थित कलाग्राम का खुला मंच व परदरसनी मैदान म तीन दिनी कौथिग उत्तराखंड महोत्सव-2017 को आयोजन फरबरी 10 से 12 तक बड़ा धूम धाम से ह्वे जख उत्तराखंड का परंपरागत लोक गीत, नृत्य, ढ़ोल दमो वादन, हस्त शिल्प, साहित्य व पहाड़ी रसोई व्यंजन आदि को उत्तराखंडी समुदाय का लोगु न भरपूर आनंद उठाइ।

देहारादून की स्वयंसेवी संस्था ''अभ्युदय'' द्वारा नाबार्ड, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला, उत्तराखंड उद्योग निदेशालय, जीवन बीमा निगम आदि का आर्थिक सहयोग व स्थानीय उत्तराखंडी संस्थाओ की मदद से चंडीगढ़म पैलि बार इतना बड़ा कार्यक्रम को आयोजन ह्वे जो परवासी समाजम खूब पसंद करेगे।

पैला दिन मा पार्षद श्रीमति हीरा नेगीजी का हथु दीप प्रज्ज्वलत करी उत्सव की शुरुवात ह्वे अर जागृति मंच पंचकुला की महिला सदस्योन पारंपरिक वेश बूशा मा बद्री - केदार वंदना करि। साँझ वेला म पद्मश्री श्रीमति वसंती बिष्ट द्वारा नन्दा जागर की प्रस्तुति ह्वे त अनीता रावत की प्रस्तुति कृष्णा तेरी बांसुरी .... भी खूब पसंद करेगे।

महोत्सव का हैंका दिन अनिल बिष्ट व त्रिभुवन उनियाल की अगुवाई म पौड़ी बिटि अयां गढ़ कला सांस्कृतिक संस्था का कलाकारुन गोपीचन्द गायन समूह नृत्य प्रस्तुत करि खूब धूम मचाई त गजेंद्र राणा न चटपटा गीत सुणाकि दर्शकू तैई खूब नचाइ। आयोजन का आखिरी दिन भारी भीड़ का सामणी अल्मोड़ा की संस्था आदर्श कला केंद्र द्वारा मंचित रामी बौराणी गीत नाटिका व कुमाउनी झोड़ा, छपेली आदि लोक नृत्य से दर्शको को भरपूर मनोरंजन ह्वे जौंको साथ स्थानीय गायक आनंद सिंह कोरंगा व दगिड्या कलाकारु भी दे।

हिमालय न्यूज से जुड्या भगवान चंद, सुमन गौड़ व धर्मानंद पुसोला द्वारा हास्य व्यंग की फुलझड़ी तीन दिनु तक दर्शकू थई गुदगुदाणी रैनी त अनन्या भट्ट, ज्योति बडोला, दिव्या भट्ट, अनुपम पुरोहित का मधुर गीत भी रोज लोगु तै सुणेणा रैनी। रुद्रप्रयाग बिटि अखिलेस दास व साथी कलाकारु न ढ़ोल दमौ म जीतू बगडवाल ,व पांडव वार्ता प्रस्तुत करी खूब मनोरंजन करि।

तीन दिन क ये मेळा म आण वळा कौथिगेरुन झुंगरु, फाणू, चैंसु, भूडा, पकोड़ा, पहाड़ी कढ़ी (झ्वळि), आदि व्यंजनो को मजा ल्हे त साथ साथ पहाड़ी दाल, व हस्त शिल्प वस्तुओ की खरीददारी करी। धाद प्रकाशन का स्टाल म गढ़वाली साहित्य भी उपलब्ध छौ।

मंच संचालन चंद्रपाल गुसाईं, राम प्रसाद सुंडली, प्रकाश चंद बलूनी व बी डी बेलवाल न करी त फोटो व विडियो चित्रण रमेश चंद की टीम न सम्हाळी। महोत्सव की परिकल्पना निधि डंगवाल की छई त रजनी खाती, राजेंद्र नौडियाल, प्रदीप नवनी, कुन्दन लाल उनियाल, प्रदीप सुंदरियाल, धरमपाल रावत, सुदेश बाशिष्ठ आदि की मेहनत से या कल्पना साकार ह्वे साकि.। मुंबई बिटि श्री केसर सिंह बिष्ट, दिल्ली बिटि सुरेन्द्र हालसी व स्थानीय संस्थाओं से कई वरषु बिटि जुड्यां जाण्या माण्या उत्तराखंडी श्री भवानी दत्त बाशिष्ठ, मेजर ओंकार सिंह नेगी, श्री नारायण दत्त लखेड़ा, सर्वश्री महानन्द शुक्ला, दीन दयाल सुंदरियाल, हरीश बड़थ्वाल, भगवती प्रसाद गौड़, बचन सिंह नगरकोटी, भगवती प्रसाद कुकसाल, बुद्धि चंद डोटियाल, भारत सिंह नेगी, जगदीश असवाल, बीरेन्द्र कंडारी, आदि की उपस्थिति ये कौथिग म बराबर रई। ये आयोजन की खास बात य छै कि लोगुन बिना पूर्व तयारी का भौत कम समय मा यो कौथिग उर्यायि जो इंतजाम अर प्रस्तुति कि कुछ कमजोरयू का बावजूद लोगु का दिल दिमाग परै छाप छोड़िग्या।

रोजगार से जोड़े जाण चयेन्दि भाषा अर संस्कृति

• वीरेन्द्र पंवार

मुख्यमंत्री हरीश रावतन बोलि कि भाषा अर संस्कृति थैं रोजगार से जोड़े जाण चयेन्द। याँका वास्ता समाज थैं ऐथर औण पड़लो। वूँन बोलि कि जतगा भि हमारी बोली भाषा अर लोककला छन, यूँथें प्रोत्साहित कन्ना वास्ता सरकारी का अलावा समाज का स्तर पर भी कोशिश होण चयेन्दन। अगर हम इन करदा त हमारा ये कदम से

हजारों लोखु तैं रोजगार मिल सकदो। जनकि अगर हम अपणां पहनावा तैं,अपणि खान-पान,अपणां गैणां। वूँन बोलि कि औण वळि सरकार से साल मा एक दिन लोकभाषा का दगड़ा हि पहनावा अर वाद्य यंत्रु का वास्ता घोषित कन्नौ अनुमोदन करला। मुख्यमंत्रीन लोभाषाओं का पक्ष मा हस्ताक्षर अभियान कि शुर्वात करि।

रावतज्जिन वोळि हमारी बोलि भाषा इथगा मिट्ठी मयाळि छन,तौ बी यूँको विस्तार नि ह्वे सकणूँ च। अपणां भाषण मा वूँन मैसूस करि कि हम यूँ भाषौं को फैलास नि करि सक्याँ हां कि लोकसंस्कृति का संग्रहालय बणांणैं दिशा मा काम चन्नूं छ। वूँन जनसामान्य से अपील करि कि उ राज्य मा राज्य कि भाषाओं का अलावा पहनावा अर खान पान थैं भि अगनैं बढ़ां। वूँन ये मामला मा ऐंपण को उधारण दे। वूँन बोलि कि वूँन ऐंपण कि शुर्वात करि छै अर आज ऐंपण से तकरीब 25 हजार लोगं कु रोजगार जुड़्यूँ छ।इनि वूँन महिलौं से खास करिक बोलि कि महिला अपणां कम से कम अद्दा जेवर पहाड़ी शैलि का बणांउन त याँसे तकरीब 25 हजार हौर लोग रोजगार से जुड़ सकदन। वूँन बोलि कि हमतैं अपणां प्रदेश कि संस्कृति से प्यार कन्न चयेन्द। लोकभाषाओं थैं पाठ्यक्रमों मा शामिल करे जाणूँ छ। याँका अलावा यूपीएससी कि परीक्षौं मा अब 30 प्रतिशत सवाल उत्तराखण्डका इतिहास अर अन्य विषयों से ल्हिऐ जाला। याँका वास्ता वूँकि आयोग का चेयरमैन से भि बात ह्वेगि।

धाद संस्थन कार्यक्रम का माध्यम से देश का प्रधानमत्रि नरेन्द्र मोदी का नौं एक ज्ञापन भेजि, ज्याँमा वूँसे माँग करीं च कि-जैं तरौं से वूँन चुनाव प्रचार का दौरान गढ़वाळि भाषा मा अपणि बात बोलि, गढ़वाळि भाषा थैं सम्मान अर मान देणा का क्रम मा उत्तराखण्ड कि लोकभाषाओं थैं आठवीं अनुसूचि मा शामिल कन्नै पहल करुन। दुसरि माँग राष्टीय लोकभाषा अकादमी कि स्थापना करे जाउ, ज्याँमा देश कि सब्बि लोकभाषौं का अध्ययन अर शोध कि बिवस्था हो देश कि सब्बि संकट ग्रस्त भाषाओं संरक्षण अर विकास का वास्ता एक दिन लोकभाषा दिवस घोषित करे जाउ। राज्यों का माध्यमिक से उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम मा 30 प्रतिशत स्थानीय इतिहास, संस्कृति, साहित्य अर प्रदर्शन कलाओं से सम्बन्धित विषय यू जी सी का निर्देशों का हिसाब से शामिल करे जाउन।राज्यों कि लोकसेवा परीक्षाओं मा कम से कम 30 प्रतिशत सवाल राज्य कि संस्कृति, इतिहास अर भाषाओं से सम्बन्धित हों।

ये मौका पर ग्राफिक ऐरा विश्वविद्यालय का कुलपति डॉ० संजय जसोला जीन बोलि कि कै बि चीजौ विकास इन होण चयेन्द कि वु लम्बा समय तक जिन्दा रौ। जैकु तैं बोलदन सस्टेनेबल डेवलपमेण्ट। वूँन बोलि कि आप लोग गढ़वाळि भाषा को सिलैबस बणांवा, मि यूजीसी अर मानव संसाधन विकास विभाग का जरिया से यूनिवर्सिटी मा शुरु करै देलु। कुमाउंनी पत्रिका पहरू का सम्पादक हयातसिंह रावत जीन बोलि कि हमतैं हमारा कपड़ौं अर रैन-सैन से क्वी नि बतै सकदो कि हम गढ़वाळि या कुमाँउनी छौं।क्वी बि हमतैं हमारी बोलि भाषा से हि पच्छ्याणदू। हमतैं अपणि भाषा अपणां घौर से बोन्नु शुरू कन्न पड़लि।जब तक हमारी नई पीढ़ि हमारा शब्दु से परिचित नि होलि तब तक हमारी संस्कृति तैं नि बींग सकदि।

भारत का महासर्वेक्षक, डॉ0 स्वर्ण सुब्बारावन बोलि कि निन्द मा बि हमारी आत्मा अपणि दुदबोलि मा सोचदि। एक उधारण से वूँन बताए कि कै पर सियां मा चुंगनी द्या, त उ अपणि मातृभाषा मा रिएक्ट कर्दु। वूँन बोलि कि मातृभाषा जिन्दा रैलि त हमारी संस्कृति जिन्दा रैलि।

वीरेन्द्र पंवारन बोलि कि मातृभाषा हमतैं हमारी संस्कृति से जोड़दि। मातृभाषा थैं रोजगार से जोड़े जाणूँ जरूरी च।वूँन बोलि कि पैलि हमारा अग्वाड़ी आर्थिक चुनौती रैनि,पर आज हमारा समाज मा होण खाण वळा लोग मौजूद छन, इलै अब भाषा का वास्ता निरन्तर काम करे जाणैं जर्वत छ।

ये मौका पर धाद लोकभाषा एकांश का महासचिव शान्तिप्रकाश 'जिज्ञासू' का सम्पादन मा 112 लिख्वारु का जीवन परिचय से सजी पुस्तक 'उत्तराखण्ड लोकभाषाओं के सृजनरत रचनाकार' नौं कि पोथि कि मुखदिखै मुख्यमंत्री हरीश रावत का हातु से करेगे। ये मौका पर डॉ0 शेरसिंह पांगती, डॉ० अचलानन्द जखमोला, माधुरी बड़थ्वाल, रवीन्द्र नेगी, कमला पन्त आदि लोग मौजूद छया।

संस्थन तय करि कि संस्था 21 फरवरी से उत्तराखण्ड कि लोकभाषाओं का पक्ष मा जागरूकता अभियान चलाली।ये अभियान का जरिया 50 हजार लोखु का दसकत कट्ठा करे जाला। इ दसकत बाद मा प्रधानमंत्री जी तक पौंछैकि वूँसे उत्तराखण्ड कि भाषाओं थैं आठवीं अनुसूची मा शामिल कन्नै माँग करे जाली।

लोकेश नवानिन बोलि कि यूनेस्कोन जौं 130 भाषौं तैं खतरा कि लिस्ट मा शामिल कयूँ च, वूँमा गढ़वालि कुमाँउनी भाषा भी शामिल छन। संस्था ये भाषा आन्दोलन थैं जनता से जोड़नै कोशिश कन्नी छ। धाद का सचिव तन्मय ममगाई न बोलि कि जैं तरौं से चुनाव का दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जीन गढ़वाळि मा भाषण देकि भाषा का निब्त जनता कि आस जगै,वे हिसाब से भि केन्द्र सरकार थैं उत्तराखण्ड कि लोकभाषाओं थैं आठवीं अनुसूची मा शामिल कन्नै पहल कन्न चयेन्द।

ये कार्यक्रम मा लोकभाषाओं के साहित्य में नई कविता का उभार विषय पर ई रिपार्ट का लिख्वार वीरेन्द्र पंवार को वक्तव्य रखेगे छौ,पर मुख्यमंत्री औणां अर जाणां टैम पर मंच पर चलदा वक्तव्य तैं बीच मा द्वी दौं रोकेगे। वीरेन्द्र पंवारन गढ़वालि

कविता पर फोकस्ड अपणां आलेख मा बोलि कि खुद अर खौरि का बखान से शुरु होई गढ़वालि कविता आज दुन्या का साहित्य कि तरौं ऐथर बढण चाणीं छ। गढ़वाळि कविता अब अफुतैं बिंगणैं अर समजणैं कोशिश कन्नी च अर समैं का हिसाब से ई बात मा कुछ गलत भि नी छ। वूँन बोलि कि गढ़वाळि कविता मा नई कविता का दर्शन कन्हैयालाल डंडरियाल जी कि कवितों से शुरु होन्दन। तबारी गढ़वालि कवि का सामणि एक तर्प त अफुतैं स्थापित कन्नै लड़ै लड़न पड़नी छै, त दुसरि तर्प कविता का सामणि या बड़ि चुनौति छै कि वा दुन्या कि कवितौं का सामणि टकटकि ह्वे सकु। गढ़वाळि कि समकालीन नइ पीढ़ि मा भाषा अर कविता कि तर्प सोर दिलौण वला युगपुरुष लोकेश नवानी बतौन्दन कि सन् 1975-76 का नजीकौ समै रै होलु,तबारी कन्हैयालाल डंडरियाल जी कि या कविता कवि सम्मेलनु का मंच पर सुणेंण बैठगे छै।

धरती को मुकट, भारत को भाल हमारू गढ़वाल।
यखै संस्कृति-गिन्दड़ु, भुज्यलु, ग्यगुड़ु, गड़याळ।

कविन गढ़वाळ मा ब्याप्त कुरीतियों, जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं, तंत्रा-मंत्रा आदि पर ब्यंग कन्नी। लोक प्रतीकों वळि वूँकी अभिब्यक्ति की शैली प्रभावित कर्दि। इख बटिन डंडरियाळ जीन कविता का पारम्परिक मिजाज मा बदलाव का संकेत देनि। कन्हैयालाल डंडरियाल का बाद गढ़वाळी कविता मा इ परिवर्तन एकदम तेज ह्वेगेनि। सन् 1977-80 का दौरान स्पष्ट रूप से कवितौं मा दिखेण बैठनि। आठवां दशक का येई दौर थैं जख बटी गढ़वाली कविता मा नयो उभार या नया परिवर्तन दिखेन्दन।

गढवाळि समग्र साहित्य का समीक्षक भीष्म कुकरेती वर्तमान दौर थैं गढ़वाळि कविता को स्वर्णकाल माणदा। डंडरियाल जी का बाद कविता का नया उभार नेत्रासिंह असवाळ जी का जरिया अगनै बढ़ि। ई परम्परा थैं चिन्मय शायर, सुरेन्द्र पाल समेत नया लिख्वारुन अगनै बढ़ै। देवेन्द्र जोशिन सियां लोग का जरिया न केवल समाज का लोगु तैं बलकन पारम्परिक कविता लिखदरा कव्यूँ अर कविता थैं बिजाल्नै बि कोशिश करि। सन् 1992 का दौर मा गणेश खुगशाळ 'गणि' गढ़वाळि कविता मा जापानी शैलि कि हाइकू कविता भी ल्हेकि ऐनि। औरि कव्यूँन भि हाइकू पर हात अजमैनि पर झणि किलै हाइकू कविता गढ़वाळि मा जादा लोकप्रिय नि ह्वे सकि। मधुसूदन थपलियाल कि अगल्यार मा गढ़वाळि कविता को एक उभार ग़ज़ल कि तर्पा भि बढ़दु दिखे। ग़ज़ल गढ़वाळि लिख्वारु तैं रास भी औणीं छन, ग़ज़ल कि तकनीकि जानकारी कम होणां कारण भौत प्रगति होई नि दिखेन्दि।वर्तमान दौर मा एक बार फेर गढ़वाळी कविता थैं नयो उभार मिन्नूँ छ, मुधसूदन थपलियाल का कविता संग्रह 'बाघ का बोण' (सन् 2014) से। ये संग्रह कि कविता गढ़वाळि मा एक हौर क्रान्तिकारी परिवर्तन की दस्तक देन्द नजर औणीं छन। यो संकलन गढ़वाळि मा अभिब्यंजना काव्य की बेहतरीन बानगी छ।

मातृभाषा दिवस कार्यक्रम पर उरायाँ ये कार्यक्रम कि मन्सा भौत अच्छि छै,कार्यक्रम ह्वे भी बढ़िया च,पर कार्यक्रमु का घपरोळ का बीच यु महत्वपूर्ण आयोजन खतम होन्द होन्द ब्यखुनिदाँ निपटौण्याँ स्टाइल मा पुर्यायेगे। असल मा संस्था या इना कार्यक्रम कर्दरि संस्थौं थैं ध्यान देण जरूरी च कि क्वी भि कार्यक्रम फोकस्ड होण चयेन्द। या त कार्यक्रम हो या नि हो।ये भाषा दिवस का भित्र इतगा कार्यक्रम शामिल छा- मातृभाषा दिवस कार्यक्रम, किताबै मुखदिखै, मुख्यमंत्रि कि मौजूदगी, लोकभाषाओं का पक्ष मा हस्ताक्षर अभियान, नई कविता का उभार पर व्याख्यान अर कवि सम्मेलन। अब लगा कि इतगा कार्यक्रम खताखति एक साथ कनक्वे ह्वे सकदन। खैर अजकाल कार्यक्रम उर्योंण ही अपणां आप मा बड़ि बात च। ये हिसाबन कार्यक्रम सुफल रै।

❑❑

कथा ग्रन्थ "हुंगरा" को लोकार्पण

• गिरीश सुन्दरियाल

गढ़वाळी कथा ग्रन्थ ''हुंगरा'' को दिनांक 25 फरवरी 2017 खुणि टाउनहाल देहरादून मा लोकर्पण हवे ''हुंगरा'' गढ़वाळ कथा साहित्य को एक महत्वपूर्ण अर प्रतिनिधि दस्तावेज छ जैमा कथा जगत की भूत वर्तमान अर भविष्य का दर्शन होंदन ''हुंगरा'' यीं बातो की पुख्ता प्रमाण छ कि गढ़वाळि मा कहानी विधा कतगा पुराणी अर सशक्त छ, हुंगरा विश्व का कथा साहित्य मा एक अनूठो अर अपणि तरौ को अलग संकलन छा।

''हुंगरा'' मा सौ सालै सौ श्रेष्ठ कथा संकलित छन जो कि शायद इनु प्रयोग हौरि भाषौ मा नि हवे, गढ़वाळी की कथा जात्रा सौ सालु मा कन रै यीं मा क्या बदलौ ऐनी, अपणा सम्पूर्ण समाज की अन्द्वार या मा दिखेंद। 'हुंगरा की शुर्वात 1913 मां सदानन्द कुकरेती की कथा ''गढ़वाळि ठाट'' से होंद अर 2013 तक की कहानी तक पौंछद, यानै य सौ-सालै कथा जात्रा को एतिहासिक दस्तावेज वि छ। भाषाविदों को मानणु छ बल साहित्य भाषा को पुखता अर एतिहासिक प्रमाण छ अर गढ़वाळ मा यांकी क्वी कमी नी।

अब क्वी इन नि बोलि सक्दु कि गढ़वाळ कथा की गंगा बिसगणी छ, जै समाज को साहित्य जतगा समृद्ध होलु वा भाषा उतगै समृद्ध होली, यीं बातै गवै इतिहास बि देंदु।

हुंगरा का लोकर्पण का मौका पर कार्यक्रम मा अनेक साहित्यकार, रंगकर्मी अर बुद्धिजीवी मौजूद छया, कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकगायक श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जीन करे, मुख्य अतिथि बलूनी क्लासेस का महा निदेशक श्री विपिन बलूनी जी का प्रतिनिधि का रूप मा शिक्षाविद एस.एव. राणा जी अर विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री कवीन्द्र इष्टवाल जी छया, कार्यक्रम का ये सत्र मा मुख्य वक्ता वरिष्ठ कथाकार मोहनलाल नेगी, 'हुंगरा' संकलन पर महत्वपूर्ण समीक्षा देण वळि साहित्यकार श्रीमती बीन बेंजवाल समयसाक्ष्य की प्रकाशक श्रीमती रानू बिष्ट ग्रन्थ का सम्पादक द्वय श्री मदन मोहन डुकलाण व गिरीश सुन्दरियाल अर कार्यक्रम संचालक गणेश खुगशाल 'गणी' मंच पर मौजूद छया, अपणा सम्बोधन मो श्री एस.एस. राणा जीन बोले कि बलूनी क्लासेस अर सोशल बलूनी पब्लिक स्कूल भी अपणा स्तर पर अपणि मातृभाषा अर संस्कृति का वास्ता काम कना छन, समाज मा यांका वास्ता जो भी प्रयास कारलो हम वेकी मौ-मदद कनौ हमेशा तत्पर छां। कार्यक्रम का मुख्य अतिथि कवीन्द्र इष्टवाल जीन बोले कि हमारा समाज मा भौत सारा लोग अपणी भाषा अर संस्कृति का वास्ता महत्वपूर्ण कार्य कना छन, बिना कै सरकारी मदद अर कठिन आर्थिक परेशानी का बावजूद भी साहित्य को प्रकाशन अर वे तैं पाठकों तै पौछाणू भौत चुनौतीपूर्ण काम छ, फिर भी बावजूद ये का जु लौग इन काम कना छन वो वधै का पात्र छन, मुख्य वक्ता कथाकार मोहन लाल नेगी जीन भी गढ़वाळि कथा का इतिहास अर वर्तमान पर व्याख्यान दे। वून बोले कि हमारा वे जमाना से आज भौत अच्छु काम साहित्य मा होणूछ गढ़वाळी कथा को भविष्य भौत उज्जवल छ। मित हमेशा अध्यरा कूणा-कुमच्यरौ मा हि कथा ल्यखणू रौ, पली बार कै मंच पर अपणी बात रखणू छौ। ये मौका पर वूं तै पैला 'चिट्ठी-सम्मान' - 2017 से विभूषित करेंगे, वूं तैं अंगवस्त्रम, स्मृति चिहन, मान पत्र एवं 5001 रूप्या की धनराशि से सम्मानित करेगे। यो सम्मान समारोह पैली बार आयोजित करेगे अर चिट्ठी सम्मान पाण वळा वो पैला साहत्यिकार बणिनि।

सम्पादक मदन मोहन डुकलाण जीन ग्रन्थ की शुर्यात बटी प्रकाशन कि चुनौती अर सघर्ष को जीक्र करे वूंन तमाम साहित्यकारों, समाज सेव्यूं अर पाठकों को धन्यवाद व्यक्त करै जौंका सहयोग का बिना हुंगरा कि हम सोच बि नी सकदा छया। हुंगरा का प्रकाशन मा हमतै पट्ट पाँच-छै साल लगि गेनि आखिर सौ कहानी इकबटोळ कनी अर वे को सम्पादन अर प्रकाशन क्वी सौंगू काम त नी छ।

हुंगरा की समीक्षा जै ढंग से अर जै विस्तार से साहित्यकार बीना बेंजवालन करें, वां तै सिर्फ वी हि करि सकदि छै, वीन लगभग सब्बि कहान्यूं को सार, कथानक, संवाद उद्देश्य सहित पात्रु को चरित्र चित्रण भी बड़ी कुशलता से करें, जोकि रोचक होण का साथ-साथ गम्भीर अध्ययन व धैर्य को प्रतिफल छयो, म्यारा द्यखण मा कै समीक्षकन पैली बार 100 कथौं पर इतगा विस्तार से बोले अर वो भी कथौं का भितरखण्ड तक पौंछिकै, वींका अध्ययन अर धैर्य की जतगा भी प्रशन्सा करे जाव कमहि कम छ। अपणा अध्यक्षीय भाषण मा लोक गायक श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जीन बोले कि हमारा समाज तै अपणी भाषा अर संस्कृति का वास्ता भी उतगै चितळु होण प्वाडलो जतगा वो अपणि सुख सुविधौ का वास्ता होंदन, हम सड़क विजलि पाणी आदि का वास्ता त बड़ा-बड़ा आन्दोंलन करि देंदा सरकार पर दवाव बणा दिंदा पर भाषा-संस्कृति का सवाल पर बौग सारि दिंदा। अगर हमारी भाषा संस्कृति ही नि रैली जांसे हमारी पछ्याण छ त क्य कन हमन वूं सुख सुविधौ को। यान हमतै एकजुट-एकमुठ हवेकि सदनि अपणि बोळि-भाषा अर संस्कृति की आवाज उठाण चैंद, कार्यक्रम का पैला सत्र को समापन वूंका सम्बोधन से हवे, कार्यक्रम का दुसरा सत्र मा गढ़वळी कवि सम्मेलन वीरयेगे। जैमा श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जी का साथ ही देवेन्द्र जोशी, पयाश पोखड़ा, हरीश जुयाल 'कुटज', धर्मेन्द्र नेगी, ओमप्रकाश सेमवाल, हेवतीनन्दन भट्ट, उपासना पुरोहित, ओम वधाणी, सुनील थपलियाल घंजीर, गणेश खुगशाल 'गणी', मदन मोहन डुकलाण अर गिरिश सुन्दरियाल न कविता पाठ करे।

हुंगरा का प्रकाशन का साथ ही गढ़वाळ गद्य खास करि कहानी विधा पूरी तस्वीर समिणि ऐ जांद, गढ़वाळी गद्य का इतिहास मा कथा संग्रह को प्रयास 1946 मा प्रो0 भगवती प्रसाद पांथरी जी द्वारा 'पांच फूल' उल्लेखनीय छ, जैमा वूकी पांच कहानी संकलित छ, पर अलग-अलग कथाकारों की कहानी एक ही संकलन मा हो त यो प्रयास शकुन्त जोशी का संम्पादन मा 'रैबार' पत्रिका मा हवे, जैमा वूंका अलावा भगवती चरण निर्मोही, डॉ शिवानन्द नौटियाल, दयाधर बमराड़ा, नित्यानन्द मैठाणी, राजेन्द्र धस्माणा जना ल्यखवारू की कहानी संकलित छन। ये का बाद कुछ कहानी 1976 का अवोध बन्धु बहुगुणा जी द्वारा सम्पादित ''गाड़ म्यटेकी गंगा'' मा भी प्रकाशित ह्वनी। गढ़वाळि कथा साहित्य मा जनु महत्वपूर्ण काम भगवती प्रसाद जोशी, दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल अवोध बन्धु बहुगुणा प्रतात शिखर आदि को रये उन्नि मोहनलाल नेगी को बि छ, ये बग्त वो गढ़वाळि कथाकारों मा सबसे वरिष्ठ कथाकार छन जो हमारा बीच छन। यान ये मौका पर वूं को सम्मान हमारा

समाज अर साहित्य को सम्मान छ। जीवन का सत्तासी वसन्त देख चुक्या श्री मोहन लाल नेगी का द्वी कथा संग्रै जोनि पर छापु किलै (1967), बुरांश की पीड़ (1987) अर उपन्यास 'सुनैना' (2012) मा अर 10 गढ़वाळि कथौं को अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित छ।

'हुंगरा' का प्रकाशन से हमारो कथा साहित्य हौर सृमद्ध हौलू अब हम थै गढ़वाळि कथा कि छ्वी लगाण मा न मुण्ड कन्जाण पोड़लो न जल्का लगाण प्वाड़ली, बल्किन यूं कथौ तै पढ़न-सुणन मा हुंगरा दीण मा वा 'रात' बि खुळि जाळि जैकी बिन्सरि की जग्वाळ मा हम सब छां इनि हमारी आशा छ।

❑❑

राजनेता भारतसिंह रावत को निधन

• विमल ध्यानी

भारतीय जनता पार्टी का वरिष्ठ नेता अर उत्तराखण्ड योजना आयोग का पूर्व अध्यक्ष भारत सिंह रावत जी को 26 फरवरी 2017 को 86 साल की उमर मा निधन हवेगे बून अपणा कोटद्वार का घर मा आखिरी सांस ल्हे।

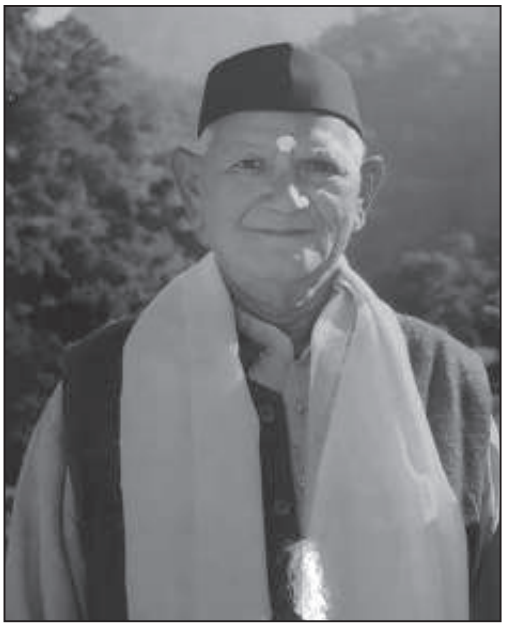

भारत सिंह रावत जी को जन्म 25 जनवरी 1930 खुणि पौड़ी जिला का रिखणीखाल बिलोक की विचला बदलपुर पट्टी का चपड़ेत गौंमा अपणां टैमा जण्या मण्या थोकदार गुमान सिंह रावत जी का घौर मा ह्वे भारतसिंह जी की मॉजी को नौ छवाणी देवी छौ।

रावत जी की प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय बुंगलगढ़ि मा ह्वे वून आठवीं तक किंगजार्ज हायर सेकेण्डरी स्कूल लैसडौन (रा०इ०का० जयहरीखाल) मा पढ़ि, हाईस्कूल डी.ए.वी. दुगद्डा, इण्टर डी.ए.बी. देहरादून अर स्नातक की शिक्षा बि डी.ए.बी. देहरादून विटि ल्हे डिग्री कालेज अल्मोड़ा विटि वून बी.टी. की परीक्षा पास की अर 1957 मा हाईस्कूल भृगुखाल का अध्यापन शुरू करि यलि छौ, 1962 मा रेजीमेंटल स्कूल लैसडौन मा विज्ञान अध्यापक का वास्ता चुने गेनि अर तैई साल विटि रावत जी नौकरी छोड़ी सक्रिय राजनीति मा ऐनि। वर्ष 1962 मा भारतसिंह रावत जि रिखणीखाल ब्लाक का ब्लाक प्रमुख बणिनि 1974 मा पैलिवार कांग्रेस का टिकट पर चुनौ लड़िकि लैसडौन विधान सभा का विधायक बणिनि, आपतकाल का बाद 1977 का लैंसडौन क्षेत्र विटि फिर बिधैक चुने गेनि, 1988 मा पौड़ी जिला पंचायत का अध्यक्ष बणिनि अर अध्यक्ष पद विटि त्यागपत्र दे कि 1988 मा लैंसडोन का विधायक चुने गेनि, रावत जी कि लोकप्रियता को अंदाजा यां से बि लगये सकेंद कि 1991 की रामलहर मा बि वो लैंसडोन क्षेत्र बिटि कांग्रेस का टिकट पर विधायक बणिनि, वर्ष 1996 मा रावत जिन भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ल्हे अर वेई साल लैंसडौन क्षेत्र बिटि भाजपा का विधायक चुने गेनि, वर्ष 2000 मा उत्तराखण्ड राज्य वणण पर रावत जी उत्तराखण्ड योजना आयोग का उपाध्यक्ष बणये गेनि, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन मा बि भारत सिंह रावत जी को बड़ो योगदान छौ।

उत्तराखण्ड की राजनीति मा ही न बलकन अखण्ड उत्तर प्रदेश की राजनीति मा भारत सिंह रावत हिमालय पुत्र हेमवती नन्दन बहुगुणा का सबसे विश्वस्त लोगु मा एक छा। रावत जी का भोलापन अर सरल स्वभौ की वजह से बहुगुणा जी तौ की नौ 'भोला' ही रखि यलि छौ और सदान भोला बोलि कि ही बुलोदा छा। उत्तराखण्ड का समग्र विकास की मनसा रखण वळा भारत सिंह रावत जी ये विकास का वास्ता 'थ्री टी' की बात करदा छा यामा पैली टी को मतलब छौ टिम्बर यानी लकड़ी मतलब बौण या से वो पर्यावरण बि जोड़दा छा दुसरी टी माने चाय की खेती अर तिसरी टी छै ट्रूरिज्म यानि पर्यटन अर उत्तराखण्ड का समग्र विकास थै वो यों तीन टी मा दिखदा छा अर वूं को यो मंत्र आज भी उत्तराखण्ड का विकास का वास्ता महत्वपूर्ण छ जरूरत छ ये पर काम करणा कि।

❑❑